CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2023 with Solution PDF-Set 2/5/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 13 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 2 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. सनातन काल से ही भारत में शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास के लिए योग द्वारा शरीर, मन और मस्तिष्क को पुष्ट किए जाने का उल्लेख मिलता है। इसलिए लोग नीरोग और दीर्घजीवी होते थे।

भारतीय संस्कृति और दर्शन किसी देश या जाति के लिए नहीं, अपितु समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए है। अत: भारतीय संस्कृति को सच्चे अर्थ में मानवता की संस्कृति कहा जा सकता है। योग हमें वैज्ञानिकता के साथ समग्र जीवन-शैली के प्रति जागरूक करता है, जिससे जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न होता है। साथ ही, इससे न केवल शांतिप्रिय जीवन पद्धति को बढ़ावा मिलता है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति के साथ मानवतापूर्ण संबंध स्थापित करने का संदेश भी प्राप्त होता है। भारत ने योग को हमेशा से सीमा, संस्कृति और भाषा से ऊपर रखा है। इसे यदि सही तरीके से समझा जाए और नियमित अभ्यास किया जाए, तो कई समस्याओं का समाधान निकाला जा सकता है। 'योग' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'युज्' शब्द से हुई है, जिसका तात्पर्य जोड़ना एवं एकीकरण करने से है। आध्यात्मिक स्तर पर जुड़ने का अर्थ है, आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलन और व्यावहारिक स्तर पर योग को शरीर, मन और भावनाओं को संतुलित करने तथा सामंजस्य बनाए रखने का एक साधन माना जाता है।

कोरोना काल में न केवल भारत, बल्कि वैश्विक स्तर पर सभी ने योग की महत्ता को देखा और जाना कि योग तनाव घटाता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। यह प्राचीन विद्या है और जीवन को नीरोगी रखने की एक दिव्य विद्या है। कोरोना काल में हम सभी ने अनुभव किया है कि योग हमें भयमुक्त, भाव में जीना सिखाता है। योग स्वस्थ और सुखी रहने के लिए अद्भुत प्रभावी विधि है, इसलिए घर-घर, हर घट, हर घाट पर योग होना चाहिए। योग सदाबहार है, रामबाण है, योग संजीवनी है। योग से तन स्वस्थ और मन विकार-मुक्त होता है। हम योग को एक टोल फ्री नम्बर की तरह उपयोग कर सकते हैं। जिस प्रकार टोल फ्री नम्बर को कोई भी, कहीं से, कभी भी डायल कर सकता है, उसी प्रकार योग भी है। जब तन-मन के लिए सच्चे मन से जागिए, तभी योग साकार हो जाता है। योग के माध्यम से हम जितने गहरे उतरेंगे, उतने शांत होंगे और पाएँगे कि अशांत करने वाले सारे तत्त्वों की धीरे-धीरे पहचान हो रही है और घने अंधेरे की जगह प्रकाश ले रहा है तथा जीवन निरंतर आनंदमय हो रहा है। समस्या शारीरिक हो या फिर पर्यावरण की, इनका समाधान है योग। आज बढ़ते प्रदूषण का समाधान केवल प्रकृतिमय जीवन पद्धति और सतत तथा सुरक्षित विकास में निहित है। यह संदेश योग के माध्यम से जीवन में आता है। अत: योग को आत्मसात कर हम स्वस्थ प्रकृतिमय जीवन जी सकते हैं। [10 अंक]

1(i). भारतीय संस्कृति को मानवता की संस्कृति कहे जाने का क्या आधार है ? [1 अंक]

(A) समस्त मानव जाति को आश्रय देने की भावना

(B) संसार की सबसे प्राचीन संस्कृति होना

(C) समस्त मानव जाति के प्रति कल्याण की भावना

(D) समस्त मानव जाति को योग की शिक्षा देना

सही उत्तर: (C) समस्त मानव जाति के प्रति कल्याण की भावना

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसी में दिए गए प्रत्यक्ष कथन और उसके प्रसंग से तय करना चाहिए।
- विकल्प में प्रयुक्त विशेष शब्दों और दावे की सीमा को मूल कथन से मिलाकर सही आशय पहचानना चाहिए।

चरण 1: पाठ का निर्णायक संकेत गद्यांश कहता है कि भारतीय संस्कृति और दर्शन किसी देश या जाति के लिए नहीं, बल्कि समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए हैं। इसी व्यापक हित की भावना से उसे मानवता की संस्कृति कहा गया है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) में आश्रय देने की बात है, जबकि आधार कल्याण है। (B) में प्राचीनता बताई गई है, जो इस विशेषण का कारण नहीं है। (D) केवल योग की शिक्षा तक सीमित है; गद्यांश का आशय संपूर्ण मानव जाति का हित है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है — समस्त मानव जाति के प्रति कल्याण की भावना।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश में खोजकर आसपास का पूरा वाक्य पढ़ें और उसी के अर्थ से विकल्प मिलाएँ।

1(ii). आध्यात्मिक स्तर पर योग साधन है – [1 अंक]

(A) आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलन का

(B) आत्मा का शरीर और मन से मिलन का

(C) आत्मा का मन और मस्तिष्क से मिलन का

(D) आत्मा का व्यक्ति और समाज से मिलन का

सही उत्तर: (A) आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलन का

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसी में दिए गए प्रत्यक्ष कथन और उसके प्रसंग से तय करना चाहिए।
- विकल्प में प्रयुक्त विशेष शब्दों और दावे की सीमा को मूल कथन से मिलाकर सही आशय पहचानना चाहिए।

चरण 1: पाठ का निर्णायक संकेत गद्यांश में आध्यात्मिक स्तर पर जुड़ने का अर्थ स्पष्ट रूप से आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलन बताया गया है। अतः यहाँ व्यक्तिगत आत्मा और व्यापक चेतना का संबंध पूछा गया है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (B) शरीर और मन से, (C) मन और मस्तिष्क से तथा (D) व्यक्ति और समाज से मिलन की बात करते हैं। इनमें से कोई भी गद्यांश में दी गई आध्यात्मिक परिभाषा नहीं है। शरीर, मन और भावनाओं का संतुलन व्यावहारिक स्तर से संबंधित है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है — आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलन।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश में खोजकर आसपास का पूरा वाक्य पढ़ें और उसी के अर्थ से विकल्प मिलाएँ।

1(iii). कोरोना काल में लोगों को किसके महत्त्व का ज्ञान हुआ ? [1 अंक]

(A) अच्छे स्वास्थ्य का

(B) योग के महत्त्व का

(C) चिकित्सकों का

(D) पेड़-पौधों का

सही उत्तर: (B) योग के महत्त्व का

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसी में दिए गए प्रत्यक्ष कथन और उसके प्रसंग से तय करना चाहिए।
- विकल्प में प्रयुक्त विशेष शब्दों और दावे की सीमा को मूल कथन से मिलाकर सही आशय पहचानना चाहिए।

चरण 1: पाठ का निर्णायक संकेत कोरोना काल संबंधी अनुच्छेद में कहा गया है कि भारत के साथ वैश्विक स्तर पर सभी ने योग की महत्ता को देखा और जाना। आगे तनाव घटने और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ने के लाभ इसी बात को स्पष्ट करते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) अच्छा स्वास्थ्य योग का लाभ हो सकता है, पर प्रश्न में पूछे गए ज्ञान का प्रत्यक्ष विषय योग है। (C) चिकित्सकों और (D) पेड़-पौधों के महत्त्व का ज्ञान होने की बात इस प्रसंग में नहीं कही गई है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है — योग के महत्त्व का।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश में खोजकर आसपास का पूरा वाक्य पढ़ें और उसी के अर्थ से विकल्प मिलाएँ।

1(iv). योग को संजीवनी क्यों कहा गया है ? [1 अंक]

(A) विश्व में भारत की पहचान बनाने के कारण

(B) संसार की प्राचीनतम विद्या होने के कारण

(C) ऋषि-मुनियों द्वारा महत्त्व दिए जाने के कारण

(D) शरीर को स्वस्थ बनाने के महत्त्व के कारण

सही उत्तर: (D) शरीर को स्वस्थ बनाने के महत्त्व के कारण

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसी में दिए गए प्रत्यक्ष कथन और उसके प्रसंग से तय करना चाहिए।
- विकल्प में प्रयुक्त विशेष शब्दों और दावे की सीमा को मूल कथन से मिलाकर सही आशय पहचानना चाहिए।

चरण 1: पाठ का निर्णायक संकेत गद्यांश योग को स्वस्थ और सुखी रहने की प्रभावी विधि बताता है। योग से तन स्वस्थ और मन विकार-मुक्त होता है। इस जीवनदायी और स्वास्थ्यवर्धक प्रभाव के कारण उसे संजीवनी कहा गया है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) भारत की पहचान, (B) विद्या की प्राचीनता और (C) ऋषि-मुनियों द्वारा महत्त्व दिया जाना संजीवनी कहने का तत्काल कारण नहीं हैं। संजीवनी का अर्थ यहाँ जीवन को पुष्ट और नीरोग बनाने वाले साधन से है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है — शरीर को स्वस्थ बनाने के महत्त्व के कारण।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश में खोजकर आसपास का पूरा वाक्य पढ़ें और उसी के अर्थ से विकल्प मिलाएँ।

1(ix). योग शरीर को स्वस्थ रखने के साथ-साथ प्रेरणा भी देता है – [1 अंक]

(A) सादा जीवन उच्च विचार रखने का

(B) समस्त विश्व को परस्पर जोड़ने का

(C) समस्त मानव मात्र के कल्याण का

(D) प्रकृतिमय जीवन-पद्धति अपनाने का

सही उत्तर: (D) प्रकृतिमय जीवन-पद्धति अपनाने का

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसी में दिए गए प्रत्यक्ष कथन और उसके प्रसंग से तय करना चाहिए।
- विकल्प में प्रयुक्त विशेष शब्दों और दावे की सीमा को मूल कथन से मिलाकर सही आशय पहचानना चाहिए।

चरण 1: पाठ का निर्णायक संकेत गद्यांश के अंत में बढ़ते प्रदूषण का समाधान प्रकृतिमय जीवन-पद्धति तथा सतत और सुरक्षित विकास में बताया गया है। लेखक स्पष्ट करता है कि यह संदेश योग के माध्यम से जीवन में आता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) सादा जीवन उच्च विचार रखने की बात यहाँ नहीं कही गई है। (B) विश्व को जोड़ना योग के व्यापक अर्थ से जुड़ सकता है और (C) मानव कल्याण संस्कृति का लक्ष्य है; इस प्रश्न का प्रत्यक्ष संकेत अंतिम वाक्य के प्रकृतिमय जीवन की ओर है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है — प्रकृतिमय जीवन-पद्धति अपनाने का।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश में खोजकर आसपास का पूरा वाक्य पढ़ें और उसी के अर्थ से विकल्प मिलाएँ।

1(v). टोल फ्री नंबर से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) संचार-सेवा के लिए उपलब्ध नि:शुल्क फोन नंबर

(B) मनोरंजन के लिए उपलब्ध नि:शुल्क फोन नंबर

(C) खरीददारी के लिए उपलब्ध नि:शुल्क फोन नंबर

(D) शिकायत दर्ज कराने के लिए उपलब्ध नि:शुल्क फोन नंबर

सही उत्तर: (A) संचार-सेवा के लिए उपलब्ध नि:शुल्क फोन नंबर

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसी में दिए गए प्रत्यक्ष कथन और उसके प्रसंग से तय करना चाहिए।
- विकल्प में प्रयुक्त विशेष शब्दों और दावे की सीमा को मूल कथन से मिलाकर सही आशय पहचानना चाहिए।

चरण 1: पाठ का निर्णायक संकेत टोल फ्री नंबर का सामान्य अर्थ ऐसी संचार-सेवा के लिए उपलब्ध फोन नंबर है जिसका उपयोग करने पर कॉल करने वाले को शुल्क नहीं देना पड़ता। गद्यांश में इसकी सहज उपलब्धता की तुलना योग से की गई है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (B) मनोरंजन, (C) खरीददारी और (D) शिकायत दर्ज कराना किसी फोन सेवा के विशेष उद्देश्य हो सकते हैं। किंतु टोल फ्री शब्द किसी एक उद्देश्य तक सीमित नहीं है। व्यापक अर्थ में नि:शुल्क संचार-सेवा वाला विकल्प उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है — संचार-सेवा के लिए उपलब्ध नि:शुल्क फोन नंबर।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश में खोजकर आसपास का पूरा वाक्य पढ़ें और उसी के अर्थ से विकल्प मिलाएँ।

1(vi). योग और टोल फ्री नंबर में क्या समानता नहीं है ? [1 अंक]

(A) दोनों का लाभ सबके द्वारा प्राप्त किया जा रहा है।

(B) दोनों का लाभ कभी भी प्राप्त किया जा सकता है।

(C) दोनों का लाभ कोई भी प्राप्त कर सकता है।

(D) दोनों का लाभ कहीं भी प्राप्त किया जा सकता है।

सही उत्तर: (A) दोनों का लाभ सबके द्वारा प्राप्त किया जा रहा है।

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसी में दिए गए प्रत्यक्ष कथन और उसके प्रसंग से तय करना चाहिए।
- विकल्प में प्रयुक्त विशेष शब्दों और दावे की सीमा को मूल कथन से मिलाकर सही आशय पहचानना चाहिए।

चरण 1: पाठ का निर्णायक संकेत गद्यांश में टोल फ्री नंबर को कोई भी, कहीं से और कभी भी डायल कर सकने की बात है। योग के लिए भी ऐसी ही उपलब्धता बताई गई है। इससे सबके द्वारा वास्तव में लाभ प्राप्त किए जाने का दावा नहीं निकलता।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (B) कभी भी, (C) कोई भी और (D) कहीं भी लाभ प्राप्त कर सकना गद्यांश में दी गई समानताएँ हैं। प्रश्न में समानता नहीं पूछी गई है, इसलिए उपलब्ध होने की संभावना और सबके उपयोग करने की वास्तविक स्थिति के अंतर को पहचानना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है — दोनों का लाभ सबके द्वारा प्राप्त किया जा रहा है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश में खोजकर आसपास का पूरा वाक्य पढ़ें और उसी के अर्थ से विकल्प मिलाएँ।

1(vii). गद्यांश के आधार पर प्राचीनकाल में लोगों के नीरोग और दीर्घजीवी होने का क्या कारण था ? [1 अंक]

(A) शुद्ध सात्विक भोजन ग्रहण करना

(B) शुद्ध प्राकृतिक वातावरण का होना

(C) खूब शारीरिक परिश्रम करना

(D) योग को जीवन का प्रमुख अंग बनाना

सही उत्तर: (D) योग को जीवन का प्रमुख अंग बनाना

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसी में दिए गए प्रत्यक्ष कथन और उसके प्रसंग से तय करना चाहिए।
- विकल्प में प्रयुक्त विशेष शब्दों और दावे की सीमा को मूल कथन से मिलाकर सही आशय पहचानना चाहिए।

चरण 1: पाठ का निर्णायक संकेत प्रारंभ में बताया गया है कि प्राचीन भारत में योग द्वारा शरीर, मन और मस्तिष्क को पुष्ट किया जाता था। इसके तुरंत बाद इसलिए लोग नीरोग और दीर्घजीवी होते थे कहा गया है। इसलिए कारण योग का जीवन में समावेश है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) सात्विक भोजन, (B) शुद्ध प्राकृतिक वातावरण और (C) अधिक शारीरिक परिश्रम सामान्यतः स्वास्थ्य से संबंधित हो सकते हैं, पर इस अंश में उन्हें नीरोगता और दीर्घायु का कारण नहीं बताया गया है। उत्तर बाहरी ज्ञान के स्थान पर गद्यांश से लेना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है — योग को जीवन का प्रमुख अंग बनाना।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश में खोजकर आसपास का पूरा वाक्य पढ़ें और उसी के अर्थ से विकल्प मिलाएँ।

1(viii). निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

(क) योग तनाव घटाता है।

(ख) रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।

(ग) योग सभी समस्याओं का समाधान है।

ऊपर लिखित कथनों में से कौन सा / कौन से सही है / हैं ? [1 अंक]

(A) केवल (क)

(B) केवल (ग)

(C) (क) और (ख)

(D) (ख) और (ग)

सही उत्तर: (C) (क) और (ख)

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसी में दिए गए प्रत्यक्ष कथन और उसके प्रसंग से तय करना चाहिए।
- विकल्प में प्रयुक्त विशेष शब्दों और दावे की सीमा को मूल कथन से मिलाकर सही आशय पहचानना चाहिए।

चरण 1: पाठ का निर्णायक संकेत कोरोना काल के संदर्भ में गद्यांश सीधे कहता है कि योग तनाव घटाता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। इसलिए कथन (क) और (ख) दोनों का स्पष्ट समर्थन मिलता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण कथन (ग) में सभी समस्याओं का समाधान होने का निरपेक्ष दावा है। गद्यांश कई समस्याओं के समाधान और विशेषतः शारीरिक तथा पर्यावरण की समस्याओं की बात करता है। इसलिए इस सामान्यीकृत कथन को सही नहीं माना

जाएगा। (A) अधूरा है; (B) और (D) में असमर्थित (ग) शामिल है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है — (क) और (ख)।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश में खोजकर आसपास का पूरा वाक्य पढ़ें और उसी के अर्थ से विकल्प मिलाएँ।

1(x). निम्नलिखित कथन, कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके बाद दिए गए विकल्पों में से एक सही विकल्प चुनकर लिखिए –
कथन (A) : घर-घर, हर घट, हर घाट पर योग होना चाहिए।
कारण (R) : योग से तन स्वस्थ और मन विकार-मुक्त होता है। [1 अंक]

(A) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।
(C) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(D) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (A) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में योग को स्वस्थ और सुखी रहने की प्रभावी विधि कहा गया है।
- कथन और कारण की सत्यता जाँचने के बाद यह देखना आवश्यक है कि कारण कथन का समर्थन करता है या नहीं।

चरण 1: कथन की सत्यता गद्यांश में स्पष्ट कहा गया है कि योग घर-घर, हर घट और हर घाट पर होना चाहिए। इसका आशय है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में योग का स्थान होना चाहिए। इसलिए कथन सत्य है।

चरण 2: कारण की सत्यता गद्यांश के अनुसार योग से तन स्वस्थ और मन विकार-मुक्त होता है। योग का शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य पर लाभकारी प्रभाव कारण को सत्य सिद्ध करता है।

चरण 3: व्याख्या का संबंध तन और मन के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होने के कारण ही योग को सभी तक पहुँचाने की आवश्यकता है। अतः कारण कथन की सही व्याख्या करता है। विकल्प (B) कथन को गलत बताता है और (C) दोनों को गलत बताता है; ये पाठ के विपरीत हैं। विकल्प (D) सही व्याख्या के संबंध को नकारता है, इसलिए वह भी गलत है।

चरण 4: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है। कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

त्वरित सुझाव: कथन-कारण में पहले दोनों की सत्यता जाँचें, फिर देखें कि कारण से कथन का औचित्य सिद्ध होता है या नहीं।

2(a). प्रतीक्षा की
बहुत जोही बाट
जेठ बीता, हुई वर्षा नहीं, नभ यों रहा खल्वाट
आज है आषाढ़ वदि षष्ठी
उठा था ज़ोर का तूफ़ान
उसके बाद
सघन काली घन घटा से
हो रहा आच्छन्न यह आकाश
आज होगी, सजनि, वर्षा-हो रहा विश्वास
हो रही है अवनि पुलकित, ले रही नि:श्वास
किंतु अपने देश में तो
सुमुखि, वर्षा हुई होगी एक क्या, कै बार
गा रहे होंगे मुदित हो लोग ख़ूब मलार
भर गई होगी अरे वह वाग्मती की धार
उगे होंगे पोखरों में कुमुद पद्म मखान
आँख मूँदे कर रहा मैं ध्यान
लिखूँ क्या प्रेयसि, यहाँ का हाल
सामने ही बह रही भागीरथी, बस यही है कल्याण
जिस किसी भाँति गर्मी से बचे हैं प्राण
आज उमड़ी घन घटा को देख
मन यही करता कि मैं भी, प्रियतमे, उसका करूँ आह्वान
– कालिदास समान
सामने सरपट पड़ा मैदान
है न हरियाली किसी भी ओर
तृण-लता तरुहीन
नग्न प्रांतर देख
उठ रहा सिर में बड़ा ही दर्द
हरा धुँधला या कि नीला –
आ रहा चश्मा न कोई काम
किंतु मुझको हो रहा विश्वास
यहाँ भी बादल बरसने जा रहा है आज
अब न सिर में उठेगा फिर दर्द
गंगा नहाते वक़्त
आया ख्याल
हिमालय में गल रही है बर्फ़ :
आज होगा ग्रीष्म ऋतु का अंत [5 अंक]

2(a)(i). 'आज वर्षा होगी' कवि के इस अति विश्वास का आधार क्या है ? [1 अंक]

(A) जेठ मास का समाप्त होना

(B) आषाढ़ मास का आगमन

(C) धरती का प्रसन्न होना

(D) आकाश में काले बादलों का घिर आना

सही उत्तर: (D) आकाश में काले बादलों का घिर आना

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में कवि के विश्वास का आधार उसके सामने उपस्थित प्राकृतिक संकेत हैं।
- उत्तर के लिए प्रश्न से ठीक पहले आए बादलों के वर्णन को देखना चाहिए।

चरण 1: निर्णायक संकेत पहचानें कवि कहता है कि सघन काली घटा से आकाश ढक रहा है। इसके तुरंत बाद वह आज वर्षा होने का विश्वास व्यक्त करता है। इस क्रम से स्पष्ट है कि विश्वास का प्रत्यक्ष आधार आकाश में काले बादलों का घिरना है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच जेठ का बीतना विकल्प (A) है, पर जेठ बीतने पर भी वर्षा नहीं हुई थी। आषाढ़ का आगमन विकल्प (B) ऋतु का संकेत है, किंतु प्रत्यक्ष आधार नहीं। धरती का प्रसन्न होना विकल्प (C) वर्षा की संभावना से जुड़ी प्रतिक्रिया है। काले बादलों का घिरना ही वर्षा का ठोस संकेत है, इसलिए विकल्प (D) उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है — आकाश में काले बादलों का घिर आना।

त्वरित सुझाव: विश्वास का आधार पूछे जाने पर ऋतु के नाम से आगे बढ़कर कवि के सामने दिखाई देने वाला प्रत्यक्ष संकेत खोजें।

2(a)(ii). 'उठ रहा सिर में बड़ा ही दर्द' – पंक्ति के संदर्भ में कवि के सिर में उठने वाले दर्द का कारण क्या है ? [1 अंक]

(A) उसके स्वास्थ्य का ठीक न होना

(B) समय पर वर्षा न होना

(C) हरियाली विहीन प्रांतर का होना

(D) भागीरथी में पानी कम होना

सही उत्तर: (C) हरियाली विहीन प्रांतर का होना

हल:

अवधारणा:

- किसी पंक्ति का कारण जानने के लिए उससे पहले और बाद की पंक्तियाँ साथ पढ़नी चाहिए।
- काव्यांश में हरियाली-विहीन दृश्य कवि की पीड़ा का कारण बनता है।

चरण 1: संदर्भ पढ़ें कवि सामने फैले मैदान को तृण, लता और वृक्षों से रहित बताता है। वह कहता है कि किसी ओर हरियाली नहीं है और ऐसे नग्न प्रांतर को देखकर उसके सिर में दर्द उठ रहा है। इसलिए दर्द का संबंध उजाड़ दृश्य से है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण विकल्प (A) में स्वास्थ्य खराब होने की बात है, जिसका पाठ में उल्लेख नहीं। विकल्प (B) में समय पर वर्षा न होना व्यापक परिस्थिति है, पर पंक्ति का तत्काल कारण नहीं। विकल्प (D) भागीरथी में पानी कम होने की बात कहता है, जबकि पाठ ऐसा नहीं कहता। विकल्प (C) हरियाली-विहीन प्रांतर को बताता है और सीधे प्रसंग से मेल खाता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है — हरियाली-विहीन प्रांतर का होना।

त्वरित सुझाव: पंक्ति में व्यक्त पीड़ा का कारण चुनते समय उसके ठीक पहले वर्णित दृश्य को उत्तर से मिलाएँ।

2(a)(iii). 'हो रहा आच्छन्न यह आकाश' – पंक्ति में 'आच्छन्न' शब्द का अर्थ है – [1 अंक]

(A) दबा हुआ

(B) ढका हुआ

(C) फैला हुआ

(D) बिखरा हुआ

सही उत्तर: (B) ढका हुआ

हल:

अवधारणा:

- शब्दार्थ का चयन उस वाक्य और दृश्य के अनुसार किया जाता है जिसमें शब्द प्रयुक्त हुआ है।
- सघन काली घटा के संदर्भ में आच्छन्न का अर्थ आवृत या ढका हुआ है।

चरण 1: पंक्ति का आशय समझें पंक्ति में आकाश का वर्णन है। सघन काले बादल आकाश पर छा रहे हैं, इसलिए आकाश बादलों से ढक रहा है। यहाँ आच्छन्न शब्द इसी ढके होने की अवस्था को व्यक्त करता है।

चरण 2: अन्य अर्थ अलग करें विकल्प (A) दबा हुआ किसी दबाव की स्थिति बताता है, जिसका यहाँ प्रसंग नहीं। विकल्प (C) फैला हुआ विस्तार की अवस्था है, पर आकाश को बादल ढक रहे हैं। विकल्प (D) बिखरा हुआ छितराने का भाव देता है, जबकि सघन घटा का वर्णन है। इसलिए विकल्प (B) ढका हुआ ही सही और प्रसंगानुकूल अर्थ है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है — ढका हुआ।

त्वरित सुझाव: शब्द का अर्थ चुनने से पहले उसे पंक्ति में रखकर पढ़ें; जो अर्थ पूरा दृश्य स्पष्ट करे, वही चुनें।

2(a)(iv). शहरी मैदान को कवि ने 'नग्न' क्यों कहा है ? [1 अंक]

(A) तृण विहीन होने के कारण

(B) लता विहीन होने के कारण

(C) तरुहीन होने के कारण

(D) वनस्पतिहीन होने के कारण

सही उत्तर: (D) वनस्पतिहीन होने के कारण

हल:

अवधारणा:

- मैदान की नग्नता वनस्पतियों के अभाव का बिंब है। काव्यांश में तृण, लता और तरु तीनों की अनुपस्थिति तथा किसी भी ओर हरियाली न होने का उल्लेख मिलता है।
- विकल्प का निर्णय काव्यांश के प्रसंग और प्रश्न में माँगे गए अर्थ के अनुसार करना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग का आधार समझें कवि कहता है कि मैदान में किसी भी ओर हरियाली नहीं है। आगे तृण-लता तरुहीन कहकर वह घास, बेलों और वृक्षों से रहित मैदान का चित्र प्रस्तुत करता है। इसलिए नग्न का अर्थ प्राकृतिक हरित आवरण से रहित है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (D) वनस्पतिहीन होना इन सभी अभावों को एक साथ समेटता है। (A) केवल तृण, (B) केवल लता और (C) केवल तरु का अभाव बताते हैं। ये तीनों विकल्प व्यापक वनस्पतिहीनता के एक-एक अंश हैं; पूरी स्थिति को व्यक्त करने वाला विकल्प (D) है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (D) है — वनस्पतिहीन होने के कारण।

त्वरित सुझाव: तृण, लता और तरु तीनों का अभाव मिले तो केवल घास या पेड़ के स्थान पर व्यापक वनस्पतिहीनता चुनें।

2(a)(v). 'हो रही अवनि पुलकित, ले रही नि:श्वास' – काव्य पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ? [1 अंक]

(A) अनुप्रास

(B) रूपक

(C) यमक

(D) मानवीकरण

सही उत्तर: (D) मानवीकरण

हल:

अवधारणा:

- अलंकार की पहचान शब्दों की ध्वनि के साथ उनके अर्थ और चित्रित क्रिया से होती है। जड़ प्रकृति पर मनुष्य की भावनाओं और क्रियाओं का आरोप मानवीकरण कहलाता है।
- विकल्प का निर्णय काव्यांश के प्रसंग और प्रश्न में माँगे गए अर्थ के अनुसार करना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग का आधार समझें पंक्ति में अवनि अर्थात् पृथ्वी को पुलकित बताया गया है और उसके नि:श्वास लेने की कल्पना की गई है। पुलकित होना और साँस लेना मानव जैसे जीवंत व्यक्तित्व के गुण हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (D) में जड़ पृथ्वी को मनुष्य की तरह अनुभव करते दिखाया गया है। (A) अनुप्रास के लिए वर्ण-साम्य, (B) रूपक के लिए अभेद-आरोप और (C) यमक के लिए एक शब्द की भिन्न अर्थों में पुनरावृत्ति चाहिए; यहाँ निर्णायक विशेषता ये नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अत: सही विकल्प (D) है — मानवीकरण।

त्वरित सुझाव: प्रकृति के प्रसन्न होने या साँस लेने जैसे मानवीय व्यवहार दिखें तो पहले मानवीकरण की जाँच करें।

अथवा

2(b). मैं भी अगर एक छोटा पंछी होता
तो बस्ती-बस्ती में फिरता रहता
सुंदर नद-नालों का यार होता
मस्ती में अपनी झूमता रहता। मैं भी अगर .....
आदमी का गुण मुझ में न होता
ईर्ष्या की आग में न जलता होता
स्वार्थ के युद्ध में न मरता-मारता
बंब-मिसाइल की वर्षा न करता। मैं भी अगर .....
आँख में दौलत का काजल न पुतता
शान के लिए पराया माल न हड़पता
हर मानव मेरा हित-बंदु होता
रंग-रूप पर अपना गर्व न करता। मैं भी अगर .....
तब सारा जग मेरा अपना होता
पासपोर्ट-वीज़ा कोई न खोजता
स्वच्छन्द वन-वन में घूमता होता
विश्व-भर में मेरा अपना राज्य होता। मैं भी अगर .....
प्यार के गीत जन-जन को सुनाता
आवाज से अपनी सब को लुभाता
मानवता की वेदी पर सिर झुकाता
सागर-उर्मिल का झूला झुलाता

मैं भी अगर एक छोटा पंछी होता।। [5 अंक]

2(b)(i). पंछी के रूप में कवि की क्या अभिलाषा है ? [1 अंक]

(A) समस्त विश्व पर राज्य करने की

(B) समस्त विश्व का भ्रमण करने की

(C) समस्त विश्व में प्रेम-प्रसार करने की

(D) समस्त वन-प्रदेश में स्वतंत्र घूमने की

सही उत्तर: (C) समस्त विश्व में प्रेम-प्रसार करने की

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश का केंद्रीय भाव उसकी बार-बार व्यक्त इच्छा और अंतिम उद्देश्य से स्पष्ट होता है। पंछी की स्वतंत्रता यहाँ प्रेम और मानवता के प्रसार का साधन है।
- विकल्प का निर्णय काव्यांश के प्रसंग और प्रश्न में माँगे गए अर्थ के अनुसार करना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग का आधार समझें कवि कहता है कि वह प्यार के गीत जन-जन को सुनाता और मानवता की वेदी पर सिर झुकाता। इससे पंछी बनकर हर व्यक्ति तक प्रेम पहुँचाने की अभिलाषा स्पष्ट है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (C) पूरे काव्यांश की सकारात्मक भावना व्यक्त करता है। (A) राज्य करना सत्ता की आकांक्षा बना देता है। (B) विश्व-भ्रमण और (D) वन में घूमना वर्णित स्वतंत्रता के पक्ष हैं, पर प्रेम-प्रसार जैसे व्यापक उद्देश्य को पूरा नहीं बताते।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C) है — समस्त विश्व में प्रेम-प्रसार करने की।

त्वरित सुझाव: मुख्य अभिलाषा चुनते समय केवल घूमने की क्रिया नहीं, प्यार के गीत सुनाने का अंतिम उद्देश्य देखें।

2(b)(ii). 'आदमी का गुण मुझमें होता' – पंक्ति में निहितार्थ 'गुण' से कवि का अभिप्राय है [1 अंक]

(A) आदमी में विद्यमान अवगुण

(B) आदमी में विद्यमान अच्छाइयाँ

(C) आदमी में विद्यमान मानवता की भावना

(D) आदमी में विद्यमान परोपकार की भावना

सही उत्तर: (A) आदमी में विद्यमान अवगुण

हल:

अवधारणा:

- कविता में शब्द का अर्थ हमेशा सामान्य शब्दकोशीय अर्थ नहीं होता। व्यंग्य में गुण शब्द का प्रयोग दोषों के लिए भी हो सकता है; आसपास की पंक्तियाँ उसका आशय स्पष्ट करती हैं।
- विकल्प का निर्णय काव्यांश के प्रसंग और प्रश्न में माँगे गए अर्थ के अनुसार करना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग का आधार समझें आदमी का गुण मुझ में न होता के बाद कवि ईर्ष्या में जलने, स्वार्थ के लिए मरने-मारने और बम-मिसाइल बरसाने से बचना चाहता है। इसलिए गुण से यहाँ मनुष्य की बुराइयाँ अभिप्रेत हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (A) प्रसंग के व्यंग्यार्थ से मेल खाता है। (B) अच्छाइयाँ, (C) मानवता और (D) परोपकार सकारात्मक मूल्य हैं; कवि इन्हें त्यागना नहीं चाहता। वह आगे मानवता को सम्मान देता है, इसलिए इन विकल्पों को गुण का आशय नहीं मान सकते।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (A) है — आदमी में विद्यमान अवगुण।

त्वरित सुझाव: गुण का अर्थ तय करने से पहले उसके बाद की ईर्ष्या, स्वार्थ और हिंसा वाली पंक्तियाँ पढ़ें।

2(b)(iii). प्रस्तुत काव्यांश में कवि समर्थक है – [1 अंक]

(A) भ्रमण, हिंसा, भ्रष्टाचार और अहंकार का

(B) भ्रमण, अहिंसा, ईमानदारी और शानो-शौकत का

(C) शांति, हिंसा, ईमानदारी और शानो-शौकत का

(D) शांति, अहिंसा, ईमानदारी और विश्व-बंधुत्व का

सही उत्तर: (D) शांति, अहिंसा, ईमानदारी और विश्व-बंधुत्व का

हल:

अवधारणा:

- कवि का समर्थन उन मूल्यों से पहचाना जाता है जिन्हें वह अपनाना चाहता है। जिन व्यवहारों का निषेध है, उनके विपरीत सकारात्मक मूल्य कविता का संदेश बनते हैं।
- विकल्प का निर्णय काव्यांश के प्रसंग और प्रश्न में माँगे गए अर्थ के अनुसार करना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग का आधार समझें बम-मिसाइल न बरसाना शांति और अहिंसा का संकेत है। पराया माल न हड़पना ईमानदारी है। हर मानव को हित-बंधु मानना और समूचे जग को अपना समझना विश्व-बंधुत्व व्यक्त करता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (D) इन सभी संकेतों को एक साथ समेटता है। (A) में हिंसा, भ्रष्टाचार और अहंकार कविता के विरोधी हैं। (B) में शानो-शौकत का समर्थन अनुचित है। (C) में हिंसा और शानो-शौकत दोनों कवि के निषेध से टकराते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (D) है — शांति, अहिंसा, ईमानदारी और विश्व-बंधुत्व का।

त्वरित सुझाव: विकल्पों को जाँचते समय हिंसा और पराया माल हड़पने के निषेध को सकारात्मक मूल्यों में बदलकर देखें।

2(b)(iv). 'स्वच्छन्द वन-वन में घूमता होता' पंक्ति में आए 'स्वच्छन्द' शब्द का पर्यायवाची नहीं है – [1 अंक]

(A) आज़ाद

(B) निरंकुश

(C) मुक्त

(D) नियंत्रित

सही उत्तर: (D) नियंत्रित

हल:

अवधारणा:

- पर्यायवाची शब्द समान या निकट अर्थ व्यक्त करते हैं। प्रश्न में नहीं पूछा गया है, इसलिए ऐसा शब्द चुनना है जिसका अर्थ स्वच्छन्द के विपरीत हो।
- विकल्प का निर्णय काव्यांश के प्रसंग और प्रश्न में माँगे गए अर्थ के अनुसार करना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग का आधार समझें स्वच्छन्द का अर्थ है स्वतंत्र, बिना बंधन के अपनी इच्छा से चलने वाला। वन-वन घूमता पंछी किसी रोक या नियंत्रण से मुक्त है। इसलिए यहाँ मुक्त विचरण का भाव प्रमुख है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (A) आज़ाद और (C) मुक्त सीधे समानार्थी हैं। (B) निरंकुश में भी अंकुश या रोक से रहित होने का भाव है, इसलिए इस विकल्प-समूह में वह निकटार्थी है। (D) नियंत्रित का अर्थ नियंत्रण में रखा हुआ है; वह स्वच्छन्द का पर्याय नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (D) है — नियंत्रित।

त्वरित सुझाव: नहीं शब्द को रेखांकित करके स्वतंत्रता के अर्थ का उलटा बताने वाला विकल्प चुनें।

2(b)(v). 'सागर-उर्मिल का झूला झुलाता है' – पंक्ति के रेखांकित अंश में कौन-सा अलंकार है ? [1 अंक]

(A) रूपक

(B) उत्प्रेक्षा

(C) मानवीकरण

(D) अतिश्योक्ति

सही उत्तर: (A) रूपक

हल:

अवधारणा:

- रूपक में उपमेय पर उपमान का सीधा आरोप होता है। जैसे, मानो या समान जैसे तुलना-सूचक शब्दों के बिना दो रूपों को अभिन्न मानकर चित्र बनाया जाता है।
- विकल्प का निर्णय काव्यांश के प्रसंग और प्रश्न में माँगे गए अर्थ के अनुसार करना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग का आधार समझें रेखांकित सागर-उर्मिल और उसके झूले के बिंब में सागर की लहरों को झूले का रूप दिया गया है। लहरों के ऊपर-नीचे होने और झूले की गति का सीधा तादात्म्य इस कल्पना का आधार है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (A) रूपक इस अभेदात्मक बिंब को व्यक्त करता है। (B) उत्प्रेक्षा में संभावनात्मक कल्पना, जैसे मानो, प्रमुख होती है। (C) मानवीकरण के लिए मानव-गुण का आरोप और (D) अतिशयोक्ति के लिए अत्यधिक बढ़ा-चढ़ाकर कथन चाहिए। रेखांकित बिंब का आधार ये नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (A) है — रूपक।

त्वरित सुझाव: अलंकार पूरे वाक्य की क्रिया से नहीं, रेखांकित सागर और लहरों के झूले वाले बिंब से पहचानें।

3(i). नेट साउंड या नेट कहते हैं – [1 अंक]

(A) घटना स्थल से प्रत्यक्षदर्शियों की आवाज़ को

(B) शूट करते समय खुद-ब-खुद रिकार्ड होने वाली आवाज़ को

(C) खबरों को प्रभावशाली बनाने के लिए कृत्रिम आवाज़ को

(D) नेट के माध्यम से आने वाली आवाज़ को

सही उत्तर: (B) शूट करते समय खुद-ब-खुद रिकार्ड होने वाली आवाज़ को

हल:

अवधारणा:

- नेट साउंड घटना के समय स्वाभाविक रूप से रिकॉर्ड हुई परिवेश की ध्वनि है।
- स्वाभाविक ध्वनि, प्रत्यक्षदर्शी का कथन और कृत्रिम ध्वनि-प्रभाव अलग-अलग श्रेणियाँ हैं।

चरण 1: प्रमुख संकेत की पहचान शूटिंग के दौरान आसपास की आवाज़ें कैमरे के साथ स्वतः रिकॉर्ड हो जाती हैं। इन्हें नैचुरल साउंड या संक्षेप में नेट साउंड कहा जाता है। घटनास्थल की वास्तविक ध्वनियाँ समाचार को स्वाभाविकता और विश्वसनीयता देती हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) प्रत्यक्षदर्शी का कथन बाइट है, नेट साउंड की परिभाषा नहीं। (C) कृत्रिम ध्वनि संपादन में जोड़ी जाती है। (D) इंटरनेट से मिलने वाली आवाज़ का इससे संबंध नहीं है। इसलिए शूटिंग में खुद-ब-खुद रिकॉर्ड होने वाली ध्वनि सही है।

चरण 3: निष्कर्ष शूट करते समय खुद-ब-खुद रिकॉर्ड होने वाली आवाज़ को नेट साउंड कहते हैं। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: नेट को इंटरनेट से न जोड़ें; इसे नैचुरल अर्थात स्वाभाविक ध्वनि से याद रखें।

3(ii). तथ्यों या सूचनाओं को उनके घटते हुए महत्त्वपूर्ण क्रम में लिखना, कहलाता है – [1 अंक]

(A) उलटा पिरामिड शैली

(B) सीधा पिरामिड शैली

(C) कथात्मक शैली

(D) वर्णनात्मक शैली

सही उत्तर: (A) उलटा पिरामिड शैली

हल:

अवधारणा:

- उलटा पिरामिड शैली में सबसे महत्त्वपूर्ण सूचना पहले तथा शेष सूचनाएँ घटते महत्त्व में आती हैं।
- समाचार की प्राथमिकता और घटना का कालक्रम अलग आधार हैं; यहाँ महत्त्व निर्णायक है।

चरण 1: प्रमुख संकेत की पहचान प्रश्न में निर्णायक शब्द हैं: तथ्यों को घटते हुए महत्त्व के क्रम में लिखना। इस शैली में खबर का प्रमुख तथ्य मुखड़े में रखा जाता है; उसके बाद उसका विस्तार और फिर कम आवश्यक विवरण दिए जाते हैं। पाठक आरंभ में ही मुख्य समाचार जान लेता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (B) सीधा पिरामिड इस घटते महत्त्व की व्यवस्था को नहीं बताता। (C) कथात्मक शैली घटना को कथा के ढंग से प्रस्तुत करती है। (D) वर्णनात्मक शैली का केंद्र विवरण है। इनसे भिन्न उलटा पिरामिड सूचनाओं की प्राथमिकता पर आधारित है।

चरण 3: निष्कर्ष यह उलटा पिरामिड शैली है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: घटता महत्त्व देखते ही उलटे पिरामिड का चौड़ा ऊपरी हिस्सा अर्थात प्रमुख सूचना याद करें।

3(iii). ख़बर की पुष्टि करने वाले प्रत्यक्षदर्शियों के कथन को कहते हैं – [1 अंक]

(A) एंकर-पैकेज

(B) फोन-इन

(C) लाइव

(D) एंकर-बाइट

सही उत्तर: (D) एंकर-बाइट

हल:

अवधारणा:

- खबर की पुष्टि के लिए प्रत्यक्षदर्शी या संबंधित व्यक्ति के कथन की रिकॉर्डिंग बाइट कहलाती है।
- प्रत्यक्षदर्शी का कथन खबर के समर्थन में प्रमाण देता है।

चरण 1: प्रमुख संकेत की पहचान एंकर समाचार प्रस्तुत करते हुए उसके समर्थन में प्रत्यक्षदर्शी का संक्षिप्त कथन सुनवाता है। उस कथन से घटना की पुष्टि होती है तथा खबर को प्रत्यक्ष अनुभव का आधार मिलता है। दिए गए विकल्पों में इसी प्रस्तुति का नाम एंकर-बाइट है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) एंकर-पैकेज में संवाददाता की तैयार विस्तृत रिपोर्ट शामिल होती है। (B) फोन-इन फोन से संवाददाता की सूचना लेने का रूप है। (C) लाइव का अर्थ घटनास्थल से सीधा प्रसारण है। केवल पुष्टि करने वाले प्रत्यक्षदर्शी के कथन का उपयुक्त विकल्प (D) है।

चरण 3: निष्कर्ष इसे एंकर-बाइट कहते हैं। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: प्रत्यक्षदर्शी का छोटा कथन दिखे तो बाइट पहचानें; सीधे प्रसारण को लाइव समझें।

3(iv). किसी समाचार संगठन के लिए निश्चित मानदेय पर काम करने वाला पत्रकार कहलाता है – [1 अंक]

(A) पूर्णकालिक पत्रकार

(B) अंशकालिक पत्रकार

(C) स्वतंत्र पत्रकार

(D) फ्रीलांसर पत्रकार

सही उत्तर: (B) अंशकालिक पत्रकार

हल:

अवधारणा:

- अंशकालिक पत्रकार किसी समाचार संगठन के लिए निश्चित मानदेय पर काम करता है।
- निश्चित मानदेय और नियमित वेतन के अंतर से पत्रकार की श्रेणी पहचानी जाती है।

चरण 1: प्रमुख संकेत की पहचान पत्रकारिता में संगठन से संबंध और पारिश्रमिक का स्वरूप पत्रकार की श्रेणी पहचानने में सहायक होते हैं। यहाँ निश्चित मानदेय शब्द निर्णायक है। अंशकालिक पत्रकार किसी समाचार संगठन को अपनी सेवाएँ देता है और उसे तय मानदेय मिलता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) पूर्णकालिक पत्रकार नियमित कर्मचारी होता है और वेतन पाता है। (C) स्वतंत्र तथा (D) फ्रीलांसर पत्रकार सामान्यतः अलग-अलग संस्थानों के लिए रचना या खबर के आधार पर काम करते हैं। इसलिए निश्चित मानदेय वाला संबंध अंशकालिक पत्रकार की ओर संकेत करता है।

चरण 3: निष्कर्ष ऐसा पत्रकार अंशकालिक पत्रकार कहलाता है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: निश्चित मानदेय को अंशकालिक, नियमित वेतन को पूर्णकालिक और प्रति रचना भुगतान को स्वतंत्र पत्रकार से जोड़ें।

3(v). समाचार के मुखड़े में खबर लिखी जाने का सही ककार क्रम है – [1 अंक]

(A) क्या, कौन, कब, कहाँ

(B) क्या, कौन, कब, क्यों

(C) कौन, क्यों, क्या, कैसे

(D) क्या, कहाँ, कब, कैसे

सही उत्तर: (A) क्या, कौन, कब, कहाँ

हल:

अवधारणा:

- समाचार का मुखड़ा घटना के प्रमुख तथ्य संक्षेप में बताता है; क्या, कौन, कब और कहाँ इसके आरंभिक ककार हैं।
- क्यों और कैसे घटना के कारण तथा प्रक्रिया का विस्तार करते हैं।

चरण 1: प्रमुख संकेत की पहचान मुखड़े में पहले बताया जाता है कि क्या हुआ, उससे कौन जुड़ा है, घटना कब हुई और कहाँ हुई। इससे पाठक को समाचार की मूल पहचान मिल जाती है। प्रश्न में दिए क्रमों में क्या, कौन, कब, कहाँ इसी प्राथमिक सूचना को व्यवस्थित करते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (B) में कहाँ की जगह क्यों है, जो कारण का विस्तार करता है। (C) में क्यों और कैसे को पहले रखकर मूल घटना की पहचान का क्रम बदल दिया गया है। (D) में कौन अनुपस्थित है और कैसे सम्मिलित है। इसलिए इन विकल्पों की अपेक्षा (A) उचित क्रम देता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही क्रम क्या, कौन, कब, कहाँ है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: मुखड़े में पहले घटना, व्यक्ति, समय और स्थान पहचानें; फिर कारण और प्रक्रिया का विस्तार करें।

4. झूमने लगे फल,
रस अलौकिक,
अमृत धाराएँ फूटती
रोपाई क्षण की
कटाई अनंतता की
लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती
रस का अक्षय पात्र सदा का
छोटा मेरा खेत चौकोना [5 अंक]

4(i). साहित्यिक कृति से जो अलौकिक अमृत-धारा फूटी, वह किसका परिणाम है ? [1 अंक]

(A) कवि की कल्पना का
(B) किसान की मेहनत का
(C) क्षण में होने वाली रोपाई का
(D) क्षण में होने वाली कटाई का

सही उत्तर: (C) क्षण में होने वाली रोपाई का

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में रोपाई सृजन के आरंभ का और कटाई साहित्य से मिलने वाले निरंतर रस का प्रतीक है।
- क्षण में हुई रचना का फल अनंतकाल तक मिलता रहता है; कारण और परिणाम को इसी क्रम में पहचानना चाहिए।

चरण 1: काव्यांश के कारण-परिणाम का संबंध कवि पहले अलौकिक रस और अमृत-धाराओं का उल्लेख करता है तथा उसके बाद रोपाई क्षण की और कटाई अनंतता की कहता है। यहाँ क्षण में किया गया सृजन ऐसी साहित्यिक कृति को जन्म देता है जिसका आनंद अनंतकाल तक लिया जाता है। इसलिए अमृत-धारा क्षण में होने वाली रोपाई अर्थात रचनात्मक सृजन का परिणाम है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) कल्पना काव्य-सृजन की एक सामान्य शक्ति है, पर दिए गए अंश में रस के उद्भव को क्षण की रोपाई से जोड़ा गया है। (B) किसान की मेहनत वास्तविक खेती का अर्थ देती है, जबकि यहाँ साहित्यिक सृजन का रूपक है। (D) क्षण में कटाई होने की बात अंश के विपरीत है; कटाई अनंतता की कही गई है। इस प्रकार सीधे पाठगत संबंध के आधार पर (C) उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष अलौकिक अमृत-धारा क्षण में होने वाली रोपाई का परिणाम है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: रोपाई क्षण की को सृजन और कटाई अनंतता की को उसके स्थायी रस-फल से जोड़कर कारण पहचानें।

4(ii). 'कटाई अनंतता की' के माध्यम से कवि साहित्य की किस विशेषता की ओर संकेत करना चाहता है ? [1 अंक]

(A) साहित्य कालजयी होता है।
(B) साहित्य समाज-सापेक्ष होता है।
(C) साहित्य समाज का दर्पण होता है।
(D) साहित्य अनंतता का भंडार होता है।

सही उत्तर: (A) साहित्य कालजयी होता है।

हल:

अवधारणा:

- कालजयी साहित्य समय बीतने पर भी अपनी प्रभावशीलता और आनंद देने की क्षमता बनाए रखता है।

- कटाई का प्रतीकार्थ तैयार रचना से निरंतर रस प्राप्त करना है।

चरण 1: प्रमुख संकेत की पहचान अंश में रोपाई क्षण की है, जबकि कटाई अनंतता की है। इससे सृजन के छोटे आरंभ और उसके दीर्घकालिक फल का अंतर उभरता है। रचना तैयार होने के बाद अनेक पीढ़ियाँ उससे रस पाती रहती हैं। यही उसकी समय को पार करने वाली विशेषता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (B) समाज-सापेक्षता और (C) समाज का दर्पण होना साहित्य के सामाजिक संबंध बताते हैं; यहाँ समय की निरंतरता मुख्य है। (D) अनंतता का भंडार अस्पष्ट कथन है। अनंतकाल तक रस देने का सटीक साहित्यिक अर्थ कालजयी होना है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि साहित्य के कालजयी होने की ओर संकेत करता है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: अनंतता की कटाई को बार-बार मिलने वाले काव्यानंद और साहित्य की कालजयी शक्ति से जोड़ें।

4(iii). रचना कर्म की दृष्टि से साहित्य को 'रस का अक्षय पात्र' क्यों कहा गया है ? [1 अंक]

(A) साहित्य जगत में कवि की पहचान अनंतकाल तक बनी रहने के कारण

(B) साहित्य से प्राप्त आनंद के अनंतकाल तक बने रहने के कारण

(C) साहित्य और समाज का घनिष्ठ संबंध होने के कारण

(D) साहित्य मनोरंजन का प्रमुख साधन होने के कारण

सही उत्तर: (B) साहित्य से प्राप्त आनंद के अनंतकाल तक बने रहने के कारण

हल:

अवधारणा:

- अक्षय वह है जिसका क्षय न हो; साहित्य का रस बाँटने और ग्रहण करने से समाप्त नहीं होता।
- रस की अक्षयता का संबंध पाठकों के आनंद से है, केवल रचनाकार की पहचान से नहीं।

चरण 1: प्रमुख संकेत की पहचान अंश कहता है कि लुटते रहने से रस जरा भी कम नहीं होता। पाठक जितनी बार रचना पढ़ते हैं, उतनी बार उससे आनंद प्राप्त कर सकते हैं। नए पाठक और नई पीढ़ियाँ भी उसी रचना से रस ग्रहण करती हैं। इसीलिए साहित्य को रस का अक्षय पात्र कहा गया है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) कवि की प्रसिद्धि पर बल देता है, जबकि अंश का केंद्र पाठकों को प्राप्त रस है। (C) सामाजिक संबंध इस अक्षयता का कारण नहीं बताता। (D) केवल मनोरंजन का साधन होना आनंद की निरंतरता स्पष्ट नहीं करता। अतः अनंतकाल तक आनंद बने रहना उचित कारण है।

चरण 3: निष्कर्ष साहित्य से प्राप्त आनंद अनंतकाल तक बना रहता है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: अक्षय पात्र का अर्थ कभी न घटने वाला आनंद लें; इसे केवल कवि की प्रसिद्धि से न जोड़ें।

4(iv). कवि कर्म की दृष्टि से 'रोपाई' का अर्थ है [1 अंक]

(A) काव्यानंद की अनुभूति

(B) फसल की कटाई करना

(C) बीजों की बुवाई करना

(D) अनुभूति को शब्द-बद्ध करना

सही उत्तर: (D) अनुभूति को शब्द-बद्ध करना

हल:

अवधारणा:

- काव्य में खेती की क्रियाएँ रचना की अवस्थाओं के प्रतीक हैं; रोपाई अनुभूति को शब्दों में स्थापित करना है।
- रोपाई और कटाई के प्रतीक क्रमशः सृजन के आरंभ और उससे मिलने वाले रस को जोड़ते हैं।

चरण 1: प्रमुख संकेत की पहचान कवि के लिए खेत रचना का क्षेत्र है और उसकी उपज साहित्यिक आनंद है। इस संदर्भ में रोपाई उस क्षण का संकेत है जब भाव या अनुभूति शब्दों का रूप ग्रहण करती है। शब्दबद्ध अनुभूति आगे पाठकों को रस देती रहती है, इसलिए रोपाई सृजन का आरंभ है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) काव्यानंद की अनुभूति रचना के रस-फल से संबंधित है। (B) फसल काटना रोपाई से भिन्न क्रिया है। (C) बीज बोना खेती का शाब्दिक अर्थ है, जबकि प्रश्न कवि-कर्म की दृष्टि पूछता है। इसलिए अनुभूति को शब्दबद्ध करना ही उपयुक्त प्रतीकार्थ है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि-कर्म में रोपाई का अर्थ अनुभूति को शब्दबद्ध करना है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में कवि-कर्म लिखा हो तो कृषि-क्रिया का साहित्यिक प्रतीकार्थ चुनें, शाब्दिक कृषि-अर्थ नहीं।

4(v). छोटा खेत किसका प्रतीकार्थ है ? [1 अंक]

(A) फसल रोपे जाने वाले खेत का।

(B) आकार में छोटे खेत का।

(C) कागज के उस पन्ने का जिस पर रचना शब्द-बद्ध होती है।

(D) कागज के उस पन्ने का जो पुस्तक में जिल्द-बद्ध रहता है।

सही उत्तर: (C) कागज के उस पन्ने का जिस पर रचना शब्द-बद्ध होती है।

हल:

अवधारणा:

- कविता में खेती के रूपक द्वारा काव्य-रचना की प्रक्रिया समझाई गई है।
- उत्तर का चयन पाठ में दिए गए संकेतों और विकल्पों के ठीक आशय के आधार पर करना चाहिए।

चरण 1: चौकोने खेत का संकेत कवि का छोटा चौकोना खेत कागज का पन्ना है। जैसे खेत में बीज बोकर फसल उगाई जाती है, वैसे ही कवि पन्ने पर अनुभूति को शब्दों में बाँधकर रचना करता है। रोपाई, फल और रस के उल्लेख इसी सृजन-प्रक्रिया के अंग हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (A) वास्तविक खेती की भूमि बताता है और (B) केवल खेत के छोटे आकार को ग्रहण करता है; दोनों कविता के प्रतीकार्थ को छोड़ देते हैं। (D) पुस्तक में जिल्द-बद्ध पन्ने की स्थिति बताता है, रचना की प्रक्रिया नहीं। (C) में शब्द-बद्ध रचना वाला पन्ना कहा गया है, जो पूरे रूपक से मेल खाता है।

चरण 3: निष्कर्ष छोटा खेत रचना शब्द-बद्ध किए जाने वाले कागज के पन्ने का प्रतीक है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: खेत, बीज और फसल को क्रमशः पन्ने, अनुभूति और रचना से जोड़कर प्रतीक पहचानिए।

5. पिता का उस पर अगाध प्रेम होने के कारण स्वभावतः ईर्ष्यालु और संपत्ति की रक्षा में सतर्क विमाता ने उनके मरणांतक रोग का समाचार तब भेजा, जब वह मृत्यु की सूचना भी बन चुका था। रोने-पीटने के अपशकुन से बचने के लिए सास ने भी उसे कुछ न बताया। बहुत दिन से नैहर नहीं गई, सो जाकर देख आवे, यही कहकर और पहना-उढ़ाकर सास ने उसे विदा कर दिया। इस अप्रत्याशित अनुग्रह ने उसके पैरों में जो पंख लगा दिए थे, वे गाँव की सीमा में पहुँचते ही झड़ गए। 'हाय लछमिन अब आई' की अस्पष्ट पुनरावृत्तियाँ और स्पष्ट सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियाँ उसे घर तक ठेल ले गई। पर वहाँ न पिता का चिह्न शेष था, न विमाता के व्यवहार में शिष्टाचार का लेश था। दुख से शिथिल और अपमान से जलती हुई वह उस घर में पानी भी बिना पिए उलटे पैरों ससुराल लौट पड़ी। सास को खरी-खोटी सुनाकर उसने विमाता पर आया हुआ क्रोध शांत किया और पति के ऊपर गहने फेंक-फेंककर उसने पिता के चिर विछोह की मर्मव्यथा व्यक्त की। [5 अंक]

5(i). पिता की मृत्यु का समाचार भक्तिन के पास विमाता द्वारा देरी से भेजने का कारण था – [1 अंक]

(A) उसे पसंद न करना

(B) उससे ईर्ष्या करना

(C) संपत्ति की रक्षा करना

(D) कोई साधन न होना

सही उत्तर: (C) संपत्ति की रक्षा करना

हल:

अवधारणा:

- कारण संबंधी प्रश्न में पात्र की भावना और उसके कार्य के प्रत्यक्ष उद्देश्य का भेद समझना आवश्यक है।
- उत्तर का चयन पाठ में दिए गए संकेतों और विकल्पों के ठीक आशय के आधार पर करना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक संकेत गद्यांश में विमाता को संपत्ति की रक्षा में सतर्क बताया गया है। इसी सतर्कता के कारण उसने पिता के मरणांतक रोग का समाचार इतनी देर से भेजा कि वह मृत्यु की सूचना बन चुका था। देरी करने के कार्य का निकटतम उद्देश्य संपत्ति की रक्षा करना है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का अंतर (A) नापसंद करने की सामान्य भावना बताता है, जिसका इस देरी के उद्देश्य के रूप में उल्लेख नहीं है। (B) ईर्ष्या विमाता का स्वभाव है और पिता के प्रेम से जुड़ी है; प्रश्न में समाचार देर से भेजने का कारण पूछा गया है। (D) गलत है क्योंकि साधन के अभाव का कोई उल्लेख नहीं मिलता। इसलिए संपत्ति वाला विकल्प अधिक सटीक है।

चरण 3: निष्कर्ष विमाता ने संपत्ति की रक्षा करने के लिए समाचार देर से भेजा। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: किसी कार्य का कारण चुनते समय स्वभाव बताने वाले शब्द और तत्काल उद्देश्य बताने वाले पद को अलग कीजिए।

5(ii). भक्तिन ने सास के किस व्यवहार को 'अप्रत्याशित अनुग्रह' कहा है ? [1 अंक]

(A) बिना कहे ही पिता के घर जाने के लिए कहना

(B) बढ़िया-बढ़िया वस्त्र पहनने के लिए देना

(C) बढ़िया-बढ़िया गहने पहनने के लिए देना

(D) पिता के घर जाने के लिए चना-चबेना देना

सही उत्तर: (A) बिना कहे ही पिता के घर जाने के लिए कहना

हल:

अवधारणा:

- किसी विशेषण का आशय उसके पहले दिए गए पूरे प्रसंग से निर्धारित होता है।
- उत्तर का चयन पाठ में दिए गए संकेतों और विकल्पों के ठीक आशय के आधार पर करना चाहिए।

चरण 1: अप्रत्याशित कृपा का प्रसंग सास ने स्वयं कहा कि बहुत दिन से नैहर नहीं गई, इसलिए जाकर देख आए। उसने भक्तिन को पहना-उढ़ाकर विदा भी कर दिया। भक्तिन ने बिना माँगे पिता के घर जाने की अनुमति और प्रेरणा मिलने को ऐसी कृपा समझा जिसकी उसे अपेक्षा नहीं थी। इसी से वह अत्यंत प्रसन्न होकर चली।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) में सास का स्वयं पिता के घर जाने के लिए कहना है, जो अप्रत्याशित अनुग्रह का मुख्य आशय है। (B) और (C) वस्त्रों तथा गहनों तक अर्थ सीमित कर देते हैं; प्रसंग का केंद्र मायके जाने की अनुमति है। (D) में चना-चबेना देने की बात है, जिसका गद्यांश में उल्लेख नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष बिना कहे ही पिता के घर जाने के लिए कहना अप्रत्याशित अनुग्रह था। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: अप्रत्याशित अनुग्रह का अर्थ वस्तुओं की सूची से नहीं, मायके जाने की अचानक मिली अनुमति से जोड़िए।

5(iii). 'पैरों के पंखों का गाँव की सीमा में पहुँचते ही झड़ जाना' – का आशय है – [1 अंक]

(A) थकावट का दूर हो जाना

(B) खुशियों का समाप्त हो जाना

(C) खुशियों का दुख में बदल जाना

(D) पैरों की गति का मंद पड़ जाना

सही उत्तर: (C) खुशियों का दुख में बदल जाना

हल:

अवधारणा:

- लाक्षणिक अभिव्यक्ति का अर्थ पात्र की मानसिक स्थिति और घटनाओं के परिवर्तन से खुलता है।
- उत्तर का चयन पाठ में दिए गए संकेतों और विकल्पों के ठीक आशय के आधार पर करना चाहिए।

चरण 1: आनंद से शोक तक का परिवर्तन मायके जाने की अनुमति ने भक्तिन को इतना प्रसन्न किया कि उसके पैरों में मानो पंख लग गए। गाँव की सीमा में लोगों की सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियाँ और हाय लछमिन अब आई जैसे स्वर मिले। पिता से मिलने का उल्लास उनके न रहने के दुख में बदलने लगा; इसीलिए पंख झड़ने की बात कही गई है।

चरण 2: विकल्पों में सटीक आशय (A) थकावट दूर होने की बात करता है, जबकि प्रसंग शोक का है। (D) केवल पैरों की गति घटने का शाब्दिक अर्थ देता है। (B) खुशी समाप्त होने का आंशिक भाव बताता है, पर (C) उस खुशी के दुख में बदलने का पूरा प्रसंग व्यक्त करता है और इसलिए अधिक सटीक है।

चरण 3: निष्कर्ष अभिव्यक्ति का आशय खुशियों का दुख में बदल जाना है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: पंख लगना और पंख झड़ना को यात्रा की गति के बजाय उल्लास और शोक के बदलाव से समझिए।

5(iv). निम्नलिखित कथन, कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए –

कथन (A) : लक्ष्मी पिता के घर में पानी भी बिना पिए उलटे पैरों ससुराल लौट पड़ी।

कारण (R) : वह पिता के चिर-वियोग और विमाता के व्यवहार से दुखी थी। [1 अंक]

(A) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(B) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

(C) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(D) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (A) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता अलग-अलग जाँची जाती है।
- दोनों सत्य होने पर यह भी देखना आवश्यक है कि दिया कारण घटना की उचित व्याख्या करता है या नहीं।

चरण 1: कथन की सत्यता कथन सही है। गद्यांश में स्पष्ट है कि दुख से शिथिल और अपमान से जलती भक्तिन पिता के घर पानी भी पिए बिना उलटे पैरों ससुराल लौट पड़ी। अतः उसके तुरंत वापस आने का वर्णन पाठ के अनुसार है।

चरण 2: कारण की सत्यता कारण भी सही है। पिता का चिह्न तक शेष नहीं था और विमाता के व्यवहार में शिष्टाचार भी नहीं था। पिता से सदा के लिए बिछुड़ने का शोक और विमाता से मिला अपमान दोनों उसे गहरी पीड़ा दे रहे थे।

चरण 3: व्याख्या संबंध और अन्य विकल्प यही दुख तथा अपमान उस घर में न ठहरने और पानी भी न पीने का कारण बने। इसलिए कारण कथन की उचित व्याख्या करता है। (B) कथन को गलत बताता है और (C) दोनों को गलत कहता है; ये पाठ के विरुद्ध हैं। (D) व्याख्या संबंध को अस्वीकार करता है, जबकि घटना और कारण का सीधा संबंध गद्यांश में स्पष्ट है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: पहले लौटने की घटना की पुष्टि कीजिए, फिर दुख और अपमान को तुरंत लौटने के कारण के रूप में जोड़िए।

5(v). गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए –

(क) गाँव की सीमा में पहुँचते ही लक्ष्मी के पैरों में पंख लग गए।

(ख) लक्ष्मी को देखते ही गाँव वाले उसे सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से देखने लगे।

(ग) लक्ष्मी ने विमाता पर आया क्रोध पति को खरी-खोटी सुनाकर शांत किया।

उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) केवल (क)

(B) केवल (ख)

(C) केवल (क) और (ग)

(D) केवल (ख) और (ग)

सही उत्तर: (B) केवल (ख)

हल:

अवधारणा:

- प्रत्येक कथन की कर्ता, क्रिया और समय संबंधी जानकारी को गद्यांश से मिलाना चाहिए।
- उत्तर का चयन पाठ में दिए गए संकेतों और विकल्पों के ठीक आशय के आधार पर करना चाहिए।

चरण 1: कथन (क) और (ख) की जाँच (क) गलत है। भक्तिन के पैरों में पंख मायके जाने की अनुमति मिलने पर लगे थे; गाँव की सीमा में पहुँचते ही वे झड़ गए। (ख) सही है, क्योंकि गद्यांश में गाँव वालों की स्पष्ट सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियों का उल्लेख है। पिता की मृत्यु के कारण लोग उसे दया और संवेदना से देख रहे थे।

चरण 2: कथन (ग) और विकल्पों की जाँच (ग) गलत है। विमाता पर आया क्रोध शांत करने के लिए भक्तिन ने सास को खरी-खोटी सुनाई थी। पति के ऊपर उसने गहने फेंककर पिता के वियोग की व्यथा व्यक्त की थी। इसलिए केवल (ख) सत्य है। (A) तथा (C) में गलत कथन (क) है और (D) में गलत कथन (ग) जुड़ा है; ये तीनों विकल्प अस्वीकार्य हैं।

चरण 3: निष्कर्ष केवल कथन (ख) सही है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: सास को खरी-खोटी सुनाने और पति पर गहने फेंकने की दो अलग क्रियाओं को मिलाने से बचिए।

6(i). "सिल्वर वैडिंग" कहानी की विषय-वस्तु आधारित है – [1 अंक]

(A) समाज में बदलते जीवन-मूल्यों पर

(B) समाज में बदलते पारिवारिक-मूल्यों पर

(C) समाज में बदलते सामाजिक-मूल्यों पर

(D) समाज में बदलते सांस्कृतिक-मूल्यों पर

सही उत्तर: (A) समाज में बदलते जीवन-मूल्यों पर

हल:

अवधारणा:

- कहानी की विषय-वस्तु पहचानने के लिए घटनाओं को उसके व्यापक जीवन-संघर्ष से जोड़ना चाहिए।
- उत्तर का चयन पाठ में दिए गए संकेतों और विकल्पों के ठीक आशय के आधार पर करना चाहिए।

चरण 1: कथा का मुख्य द्वंद्व सिल्वर वैडिंग में यशोधर बाबू पुरानी परंपराओं, सादगी और आत्मीयता से जुड़े हैं। नई पीढ़ी की आधुनिक रुचियाँ, व्यवहार और उत्सव मनाने का ढंग उनसे अलग हैं। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ का आयोजन भी जीवन को देखने की इन बदलती दृष्टियों और पीढ़ियों के बीच अंतर को सामने लाता है।

चरण 2: विकल्पों का विस्तार (A) बदलते जीवन-मूल्यों का व्यापक विषय बताता है, जिसमें परिवार, सामाजिक व्यवहार और सांस्कृतिक रुचियों के परिवर्तन समाहित हैं। (B) केवल पारिवारिक, (C) केवल सामाजिक और (D) केवल सांस्कृतिक मूल्यों तक विषय को सीमित करते हैं। कहानी का केंद्रीय तनाव जीवन-दृष्टि में आए समग्र परिवर्तन का है।

चरण 3: निष्कर्ष कहानी की विषय-वस्तु समाज में बदलते जीवन-मूल्यों पर आधारित है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: कहानी के पारिवारिक प्रसंग को उसके व्यापक पीढ़ीगत जीवन-मूल्यों के संघर्ष से जोड़कर विषय चुनिए।

6(ii). यशोधर बाबू के मातहत उन्हें क्यों पसंद नहीं करते थे ? [1 अंक]

(A) वे अपना काम अपने मातहतों से करवाते थे।

(B) उनके कारण उन्हें दफ्तर में देर तक बैठना पड़ता था।

(C) वे जूनियरों के साथ कठोर व्यवहार करते थे।

(D) मातहतों का हँसी-मजाक उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं था।

सही उत्तर: (B) उनके कारण उन्हें दफ्तर में देर तक बैठना पड़ता था।

हल:

अवधारणा:

- पात्र के प्रति दूसरों की प्रतिक्रिया समझने के लिए उसके व्यवहार के व्यावहारिक प्रभाव को पहचानना चाहिए।
- उत्तर का चयन पाठ में दिए गए संकेतों और विकल्पों के ठीक आशय के आधार पर करना चाहिए।

चरण 1: दफ्तर के प्रसंग का आधार यशोधर बाबू दफ्तर में देर तक बैठने की आदत रखते थे। उनके देर तक रुकने के कारण मातहतों को भी दफ्तर में बैठे रहना पड़ता था। इससे उनका अपना समय प्रभावित होता था और वे इस आदत से अप्रसन्न रहते थे। प्रश्न इसी ठोस कारण को पहचानने के लिए है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना (B) देर तक बैठने की बाध्यता बताता है और प्रसंग से मेल खाता है। (A) अपना काम मातहतों से करवाने का आरोप लगाता है, जो इस अप्रसन्नता का कारण नहीं है। (C) कठोर व्यवहार और (D) हँसी-मजाक बिल्कुल न पसंद होने को कारण बताते हैं; ये भी पूछे गए प्रसंग का आधार नहीं हैं। इसलिए सामान्य अनुमान के बजाय दफ्तर में देर तक रुकने की बात चुननी चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष उनके कारण मातहतों को दफ्तर में देर तक बैठना पड़ता था। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: मातहतों की नाराजगी को उनके समय पर पड़ने वाले प्रभाव से जोड़िए, केवल अफसर की छवि से अनुमान मत लगाइए।

6(iii). दफ़्तर से बाहर निकलते समय यशोधर बाबू किशन दा द्वारा सिखाई गई कौन-सी परंपरा का पालन अवश्य करते ? [1 अंक]

(A) जूनियरों के साथ चाय-कॉफी पीना

(B) जूनियरों के साथ मनोरंजक बात करना

(C) अपनी टेबल का सारा काम खत्म करना

(D) जूनियरों के दिन-भर के काम का लेखा-जोखा लेना

सही उत्तर: (B) जूनियरों के साथ मनोरंजक बात करना

हल:

अवधारणा:

- किशन दा से मिली आत्मीय परंपरा।
- पाठ के निश्चित प्रसंग के आधार पर सही विकल्प चुनना और शेष विकल्पों का मिलान करना।

चरण 1: पाठ का संबंधित प्रसंग पहचानें यशोधर बाबू दफ़्तर से चलते समय जूनियरों से कुछ मनोरंजक बात करते थे। दिन-भर के काम में व्यवहार औपचारिक और शुष्क रहता था; जाते समय हल्का हँसी-मज़ाक उसकी शुष्कता दूर करता था। वे किशन दा से सीखी इसी परंपरा का पालन करते थे।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें जूनियरों के साथ बैठकर चाय-कॉफी पीने में समय बिताना इस परंपरा का अंग नहीं था; पाठ में साथ बैठकर चाय-पानी में समय नष्ट करना उसके विपरीत बताया गया है। अपनी टेबल का सारा काम खत्म करना और जूनियरों के काम का लेखा-जोखा लेना सामान्य कार्यालयी गतिविधियाँ हैं। वे चलते समय किए जाने वाले मनोरंजक संवाद का स्थान नहीं लेतीं।

चरण 3: निष्कर्ष जूनियरों के साथ मनोरंजक बात करना सही उत्तर है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: किशन दा की परंपरा पहचानते समय कार्यालय के काम और सहकर्मियों से आत्मीय मेल-जोल में भेद करें।

6(iv). 'मैं पढ़ने जाऊँगा' आनंदा की अपने पिता से यह बात कहने की हिम्मत क्यों नहीं होती थी ? [1 अंक]

(A) पिता के गुस्सैल स्वभाव के कारण

(B) पिता के बीमार रहने के कारण

(C) पिता की पढ़ाई में रुचि न होने के कारण

(D) पिता द्वारा पढ़ाई-खर्च वहन करने की असमर्थता के कारण

सही उत्तर: (A) पिता के गुस्सैल स्वभाव के कारण

हल:

अवधारणा:

- शिक्षा की इच्छा और पिता का भय।
- पाठ के निश्चित प्रसंग के आधार पर सही विकल्प चुनना और शेष विकल्पों का मिलान करना।

चरण 1: पाठ का संबंधित प्रसंग पहचानें आनंदा पढ़ना चाहता है, किंतु पिता के सामने अपनी इच्छा कहने में डरता है। पिता का गुस्सैल स्वभाव उसे रोकता है। वह जानता है कि पढ़ाई की बात उठाते ही पिता नाराज़ हो सकते हैं; इसलिए सीधे उनसे कहने का साहस नहीं जुटा पाता।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें पिता के बीमार रहने की बात इस झिझक का कारण नहीं है। पढ़ाई में उनकी अरुचि व्यापक विरोध की पृष्ठभूमि है, लेकिन प्रश्न आनंदा के बोलने की हिम्मत न होने का निकट कारण पूछता है। खर्च वहन करने की असमर्थता भी इस प्रसंग का निर्णायक कारण नहीं है; निर्णायक बात पिता के क्रोध का भय है।

चरण 3: निष्कर्ष पिता के गुस्सैल स्वभाव के कारण आनंदा की हिम्मत नहीं होती थी। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में इच्छा या बाधा नहीं, बोलने का साहस न होने का कारण पूछा गया है; क्रोध से उपजा भय पहचानें।

6(ix). मुअनजो-दड़ो की गलियों में टहलते हुए लेखक को किस जगह की याद आई ? [1 अंक]

(A) राजस्थान के गाँव कुलधरा की

(B) हरियाणा के गाँव कुलधरा की

(C) गुजरात के गाँव कुलधरा की

(D) पंजाब के गाँव कुलधरा की

सही उत्तर: (A) राजस्थान के गाँव कुलधरा की

हल:

अवधारणा:

- स्थानों की तुलना का प्रसंग।
- पाठ के निश्चित प्रसंग के आधार पर सही विकल्प चुनना और शेष विकल्पों का मिलान करना।

चरण 1: पाठ का संबंधित प्रसंग पहचानें मुअनजो-दड़ो की गलियों में घूमते हुए लेखक को राजस्थान के उजड़े हुए गाँव कुलधरा की याद आती है। दोनों स्थानों में कभी बसे जीवन की स्मृतियाँ और अब बचा सन्नाटा लेखक को अतीत की ओर ले जाते हैं। प्रश्न इसी स्पष्ट स्थान-स्मृति की पहचान करता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें चारों विकल्पों में गाँव का नाम कुलधरा है; अंतर केवल राज्य का है। पाठ में संदर्भ राजस्थान का है। इसलिए हरियाणा, गुजरात और पंजाब वाले विकल्प इस प्रसंग से मेल नहीं खाते। मुअनजो-दड़ो कहाँ स्थित है, यह अलग तथ्य है; यहाँ लेखक को याद आए दूसरे स्थान का राज्य चुनना है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक को राजस्थान के गाँव कुलधरा की याद आई। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: समान गाँव-नाम वाले विकल्पों में पूरा स्थान पढ़ें और याद आए स्थान को यात्रा के मूल स्थान से अलग रखें।

6(v). दीवाली बीतते ही गाँव में कैसी चहल-पहल शुरू हो जाती थी ? [1 अंक]

(A) खेतों में फसलों की बुवाई शुरू होने लगती थी।

(B) खेतों में फसलों की कटाई शुरू होने लगती थी।

(C) ईख पेरने के लिए कोल्हू चलने लगते थे।

(D) फसलों को बेचने का काम शुरू होने लगता था।

सही उत्तर: (C) ईख पेरने के लिए कोल्हू चलने लगते थे।

हल:

अवधारणा:

- ग्रामीण जीवन का मौसमी प्रसंग।
- पाठ के निश्चित प्रसंग के आधार पर सही विकल्प चुनना और शेष विकल्पों का मिलान करना।

चरण 1: पाठ का संबंधित प्रसंग पहचानें जूझ में दीवाली बीतने के बाद गाँव की चहल-पहल का संबंध ईख की पेराई से है। ईख पेरने के लिए कोल्हू चलने लगते हैं और इस काम से गाँव में गतिविधि बढ़ जाती है। आनंदा की पढ़ाई के संघर्ष की पृष्ठभूमि में ग्रामीण श्रम और खेती के ऐसे प्रसंग आते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें बुवाई और कटाई खेती की गतिविधियाँ हैं, लेकिन इस प्रश्न में दीवाली के बाद के जिस खास प्रसंग का उल्लेख है, वह कोल्हू चलने का है। इसी तरह फसल बेचने का सामान्य काम भी पूछी गई चहल-पहल का सटीक उत्तर नहीं है। पाठ के निश्चित कार्य को व्यापक कृषि-कार्य से बदलना उचित नहीं होगा।

चरण 3: निष्कर्ष दीवाली बीतते ही ईख पेरने के लिए कोल्हू चलने लगते थे। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: ऋतु से जुड़ा उत्तर अनुमान से न चुनें; दीवाली के बाद ईख और कोल्हू वाले पाठ-प्रसंग को याद करें।

6(vi). आनंदा को स्कूल में फिर से नाम लिखवाने की जरूरत क्यों नहीं पड़ी ? [1 अंक]

(A) क्योंकि दत्ताजी राव ने उसे स्कूल पढ़ने के लिए भेजा था।

(B) क्योंकि उसका नाम रजिस्टर से कटा नहीं था।

(C) क्योंकि वह गाँव के प्रतिष्ठित परिवार से था।

(D) क्योंकि उसके पिता के मास्टर जी से घनिष्ठ संबंध थे।

सही उत्तर: (B) क्योंकि उसका नाम रजिस्टर से कटा नहीं था।

हल:

अवधारणा:

- पाठशाला में पुनः प्रवेश का कारण।
- पाठ के निश्चित प्रसंग के आधार पर सही विकल्प चुनना और शेष विकल्पों का मिलान करना।

चरण 1: पाठ का संबंधित प्रसंग पहचानें आनंदा की पढ़ाई बीच में रुक गई थी, पर विद्यालय के रजिस्टर से उसका नाम कटा नहीं था। इसलिए वापस पढ़ने आने पर नए सिरे से नाम लिखवाना आवश्यक नहीं हुआ। अनुपस्थित रहने और औपचारिक रूप से नाम कट जाने में अंतर है; यहाँ पहले वाली स्थिति थी।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें दत्ताजी राव का सहयोग आनंदा को पढ़ने का अवसर दिलाने में सहायक था, पर नए नामांकन की आवश्यकता न होने का प्रशासनिक कारण वह नहीं है। प्रतिष्ठित परिवार का होना या पिता के मास्टर जी से घनिष्ठ संबंध होना भी पाठ का कारण नहीं है। सही उत्तर रजिस्टर में नाम बने रहने के स्पष्ट तथ्य पर आधारित है।

चरण 3: निष्कर्ष उसका नाम रजिस्टर से कटा नहीं था, इसलिए दोबारा नाम लिखवाने की जरूरत नहीं पड़ी। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: मदद मिलने का कारण और दोबारा नामांकन न लगने का कारण अलग रखें; यहाँ विद्यालय के रजिस्टर का तथ्य निर्णायक है।

6(vii). आनंदा ने पाठशाला नहीं जाने की बात क्यों सोची ? [1 अंक]

(A) लड़कों द्वारा खिल्ली उड़ाये जाने के कारण

(B) मास्टर जी के कठोर व्यवहार के कारण

(C) स्कूल की वर्दी न होने के कारण

(D) कॉपी-किताब न होने के कारण

सही उत्तर: (A) लड़कों द्वारा खिल्ली उड़ाये जाने के कारण

हल:

अवधारणा:

- सहपाठियों के उपहास की मानसिक प्रतिक्रिया।
- पाठ के निश्चित प्रसंग के आधार पर सही विकल्प चुनना और शेष विकल्पों का मिलान करना।

चरण 1: पाठ का संबंधित प्रसंग पहचानें पाठशाला लौटने पर आनंदा को लड़कों के उपहास का सामना करना पड़ता है। उनकी खिल्ली से उसे अपमान और संकोच अनुभव होता है। इसी कारण उसके मन में पाठशाला न जाने का विचार आता है। यह उसकी पढ़ने की इच्छा समाप्त होने का प्रमाण नहीं, तत्काल अपमान की प्रतिक्रिया है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें मास्टर जी के कठोर व्यवहार को इस निर्णय का कारण बताना पाठ-प्रसंग के विरुद्ध है। वर्दी का न होना तथा कॉपी-किताब का अभाव भी यहाँ पूछी गई मनःस्थिति का प्रत्यक्ष कारण नहीं हैं। प्रश्न उस घटना को पहचानने को कहता है जिसने आनंदा का मन दुखाया; वह लड़कों द्वारा मज़ाक उड़ाया जाना है।

चरण 3: निष्कर्ष लड़कों द्वारा खिल्ली उड़ाए जाने के कारण आनंदा ने पाठशाला नहीं जाने की बात सोची। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: आनंदा की शिक्षा-संबंधी स्थायी इच्छा और उपहास से पैदा हुई क्षणिक निराशा में अंतर करके उत्तर चुनें।

6(viii). मुअनजो-दड़ो सबसे बड़ा शहर है – [1 अंक]

(A) लौह-काल के शहरों में

(B) ताम्र-काल के शहरों में

(C) स्वर्ण-काल के शहरों में

(D) पाषाण-काल के शहरों में

सही उत्तर: (B) ताम्र-काल के शहरों में

हल:

अवधारणा:

- सभ्यता का काल और नगर का महत्त्व।
- पाठ के निश्चित प्रसंग के आधार पर सही विकल्प चुनना और शेष विकल्पों का मिलान करना।

चरण 1: पाठ का संबंधित प्रसंग पहचानें पाठ में मुअनजो-दड़ो को ताम्र-काल के शहरों में सबसे बड़ा शहर कहा गया है। यह कथन उसके प्राचीन नगरीय विस्तार का महत्त्व बताता है। प्रश्न किसी आधुनिक शहर से तुलना नहीं करता, बल्कि दिए गए ऐतिहासिक कालों में उचित श्रेणी पहचानने को कहता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें लौह-काल कहना उसे दूसरी ऐतिहासिक श्रेणी में रख देता है। स्वर्ण-काल यहाँ प्रयुक्त सही पुरातात्त्विक वर्ग नहीं है। पाषाण-काल का विकल्प भी पाठ के इस स्पष्ट उल्लेख से मेल नहीं खाता। इसलिए नगर के आकार को देखकर काल का अनुमान लगाने के बजाय पाठ में प्रयुक्त ताम्र-काल की पहचान करनी चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष मुअनजो-दड़ो ताम्र-काल के शहरों में सबसे बड़ा शहर है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: इस तथ्यात्मक प्रश्न में सबसे बड़े शहर के साथ जुड़ा ऐतिहासिक काल याद रखें: मुअनजो-दड़ो और ताम्र-काल।

6(x). निम्नलिखित कथन, कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए –

कथन (A) : सिंधु घाटी सभ्यता लघुता में भी महत्ता का अनुभव कराने वाली संस्कृति थी।

कारण (R) : (क) लो-प्रोफाइल सभ्यता थी।

(ख) यहाँ के मूर्तिशिल्प, औजार छोटे हैं।

(ग) यहाँ मिले नरेश के सिर से छोटे सिरपेंच की कल्पना भी नहीं की जा सकती। [1 अंक]

(A) कथन (A) सही है, पर सभी कारण (R) ठीक नहीं हैं।

(B) कथन (A) सही है और (ख) और (ग) कारण (R) उसकी सही व्याख्या करते हैं।

(C) कथन (A) गलत है पर सभी कारण (R) ठीक हैं।

(D) कथन (A) सही है और तीनों कारण (R) उसकी सही व्याख्या करते हैं।

सही उत्तर: (B) कथन (A) सही है और (ख) और (ग) कारण (R) उसकी सही व्याख्या करते हैं।

हल:

अवधारणा:

- सिंधु सभ्यता की कला में सादगी, छोटे आकार और कलात्मक महत्त्व का संबंध।
- कथन और प्रत्येक कारण को अलग परखकर उनके व्याख्यात्मक संबंध का निर्णय करना।

चरण 1: कथन की सत्यता जाँचें कथन सही है। सिंधु घाटी की संस्कृति में विशालता का प्रदर्शन ही महत्त्व का आधार नहीं था। छोटे आकार की वस्तुएँ भी उसकी कला, कौशल और सौंदर्यबोध का परिचय देती हैं। इसी अर्थ में वह लघुता में महत्ता का अनुभव कराने वाली संस्कृति थी।

चरण 2: तीनों कारणों को परखें कारण (क) का लो-प्रोफाइल होना उसी सांस्कृतिक विशेषता का दूसरा नाम है; वह कोई अलग ठोस प्रमाण नहीं देता। कारण (ख) छोटे मूर्तिशिल्प और औजारों का तथ्य देता है। कारण (ग) नरेश के अत्यंत छोटे सिरपेंच का उदाहरण देता है। अंतिम दोनों तथ्य दिखाते हैं कि छोटे आकार में भी कला और सांस्कृतिक गरिमा विद्यमान थी।

चरण 3: व्याख्यात्मक संबंध पहचानें लघुता में महत्ता की बात के ठोस आधार (ख) और (ग) हैं। लो-प्रोफाइल का कथन मूल बात का पुनर्कथन है, इसलिए उसे अलग कारण मानकर तीनों को समान व्याख्या कहना उचित नहीं। कथन गलत नहीं है और उदाहरणों के तथ्य भी असत्य नहीं हैं। अतः उन दोनों ठोस उदाहरणों को सही व्याख्या मानने वाला विकल्प चुनना चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष कथन सही है और कारण (ख) तथा (ग) उसकी सही व्याख्या करते हैं। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: कथन-कारण में मूल बात के दूसरे नाम और उसे सिद्ध करने वाले ठोस उदाहरण अलग करें; यहाँ छोटे शिल्प और सिरपेंच प्रमाण हैं।

7(क). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए –

सर्दी की एक कँपकँपाती रात [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा एक सजीव अनुभव प्रस्तुत किया जाता है। दृश्य, ध्वनि, स्पर्श और मनोभावों के सहारे पाठक को उस अनुभव का सहभागी बनाना चाहिए।
- लगभग 120 शब्दों की सीमा में आरंभ, घटना का विकास और प्रभावपूर्ण समापन रखें। प्रस्तुत विषय में ठंड का चित्रण किसी मानवीय प्रसंग से जोड़ने पर लेख में संवेदनशीलता आती है।

चरण 1: लेख का स्वरूप और विषय का केंद्र विषय को ही शीर्षक बनाइए। लेख को किसी व्यक्तिगत अनुभव की तरह प्रस्तुत करने के

लिए प्रथम पुरुष शैली अपनाई जा सकती है। रात का समय, कोहरा, ठंडी हवा और सुनसान सड़क जैसे विवरण वातावरण बनाएँगे। पूरे लेख को केवल मौसम का वर्णन बनाने के बजाय उसमें एक छोटी घटना जोड़ना उपयोगी होगा।

चरण 2: सामग्री का क्रम और भाषा आरंभ में कँपकँपाती रात का दृश्य रखें। इसके बाद किसी जरूरतमंद व्यक्ति से भेंट और उसकी सहायता की घटना लिखें। अंत में उससे उपजी अनुभूति प्रस्तुत करें। भाषा सरल किंतु चित्रात्मक हो तथा संवाद बहुत छोटा रहे, ताकि मुख्य अनुभव और निर्धारित शब्द-सीमा दोनों सुरक्षित रहें।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख **सर्दी की एक कँपकँपाती रात**

दिसंबर की वह रात आज भी याद है। घने कोहरे ने गलियों को ढक लिया था। पेड़ों से टकराती हवा खिड़कियों को झकझोर रही थी। रजाई में दुबके हुए भी मेरे हाथ ठंडे पड़ रहे थे। तभी बाहर से किसी के खाँसने की आवाज आई। मैंने झाँककर देखा, चौकीदार पतली चादर लपेटे पहरा दे रहा था। सड़क किनारे एक कुत्ता भी सिकुड़ा बैठा था। मैं माँ के साथ गर्म चाय और पुराना कंबल लेकर बाहर गया। चौकीदार की आँखों में चमक आ गई। माँ ने कुत्ते के लिए बोरी बिछा दी। लौटते समय हवा उतनी ही सर्द थी, लेकिन मन में अनोखी गरमाहट थी। उस रात समझ आया कि किसी का दुख बाँटने से अपना सुख कितना बढ़ जाता है।

चरण 4: निष्कर्ष इस लेख में सर्द रात का वातावरण, सहायता की छोटी घटना और उससे मिली मानवीय सीख एक क्रम में जुड़ते हैं। नमूना लेख लगभग 120 शब्दों में विषय को पूरा करता है।

त्वरित सुझाव: सर्दी के दो-तीन सजीव विवरणों के बाद एक छोटी घटना जोड़ें और अंत में उससे उपजी अनुभूति लिखें; केवल विशेषणों की सूची न बनाएँ।

7(ख). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए –
जब पिताजी की पदोन्नति हुई [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुभव आधारित रचनात्मक लेख में किसी घटना के साथ उससे जुड़े पारिवारिक वातावरण और मनोभावों को व्यक्त किया जाता है। घटना का वर्णन स्वाभाविक और क्रमबद्ध होना चाहिए।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में संक्षिप्त आरंभ, मुख्य घटना और सार्थक अंत रखें। पदोन्नति की खुशी के साथ परिश्रम, कृतज्ञता और जिम्मेदारी का भाव विषय को गहराई देता है।

चरण 1: लेख का स्वरूप और दृष्टिकोण विषय को शीर्षक बनाकर परिवार के किसी सदस्य के दृष्टिकोण से अनुभव लिखें। आरंभ में पिताजी के घर लौटने का दृश्य रखें। उनके व्यवहार या चेहरे की चमक से उत्सुकता पैदा करें। फिर पदोन्नति के समाचार को सामने लाएँ। रचनात्मक लेख में पत्र जैसा संबोधन या औपचारिक समापन आवश्यक नहीं है।

चरण 2: सामग्री की योजना समाचार मिलने के बाद परिवार की प्रसन्नता, छोटा उत्सव और पिताजी के परिश्रम की याद को क्रम से जोड़ें। एक संक्षिप्त संवाद लेख को जीवंत बनाएगा। अंतिम पंक्तियों में पदोन्नति को बढ़ी हुई जिम्मेदारी और मेहनत की प्रेरणा से जोड़ें। अनावश्यक विवरण और लंबी बातचीत छोड़कर शब्द-सीमा बनाए रखें।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख **जब पिताजी की पदोन्नति हुई**

उस शाम पिताजी रोज से जल्दी घर लौटे। उनके हाथ में मिठाई का डिब्बा और चेहरे पर चमक थी। माँ ने पूछा तो उन्होंने मुसकराकर बताया कि उनकी पदोन्नति हो गई है। हम दोनों भाई-बहन खुशी से उछल पड़े। दादी ने उन्हें आशीर्वाद दिया और माँ की आँखें भर आईं। मुझे वे रातें याद आईं, जब पिताजी देर तक कार्यालय की फाइलें देखते रहते थे। आज उनकी मेहनत को पहचान मिली थी। हमने मिलकर घर सजाया और साथ बैठकर भोजन किया। पिताजी बोले, “पद बढ़ने के साथ जिम्मेदारी भी बढ़ती है।” उनकी बात सुनकर समझ आया कि सफलता केवल उत्सव का अवसर नहीं, बेहतर काम करने का संकल्प भी है। उस दिन मैंने भी मन लगाकर पढ़ने का निश्चय किया।

चरण 4: निष्कर्ष लगभग 120 शब्दों का यह लेख पदोन्नति के समाचार, परिवार की प्रसन्नता और परिश्रम की प्रेरणा को एक अनुभव के रूप में प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: खुशी दिखाने के लिए चेहरे, संवाद और परिवार की प्रतिक्रियाओं का सहारा लें; अंत में पिताजी के परिश्रम से मिली अपनी सीख जोड़ें।

7(ग). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए –
दिनोंदिन गिरता भू-जल स्तर [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय के प्रति संवेदनशील दृष्टि, सुसंगठित विचार और प्रभावपूर्ण भाषा अपेक्षित हैं। भू-जल की समस्या को दैनिक अनुभव और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ना चाहिए।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में आकर्षक शीर्षक, समस्या का परिचय, कारण, परिणाम और समाधान का क्रम उपयोगी है। अनावश्यक आँकड़े तथा असत्यापित दावे नहीं देने चाहिए।

चरण 1: विषय और प्रस्तुति की योजना विषय का केंद्रीय प्रश्न है कि धरती के नीचे संचित जल निरंतर कम होने पर जीवन किस प्रकार प्रभावित होगा। आरंभ में सूखते कुएँ अथवा गहरे होते नलकूप का चित्र प्रस्तुत करें। मध्य में अत्यधिक दोहन, पक्की भूमि तथा वर्षाजल की उपेक्षा को कारण बनाएँ। अंत में जल-संरक्षण का व्यावहारिक संदेश दें। यह रचनात्मक लेख है, इसलिए पत्र की तरह पता या संबोधन आवश्यक नहीं है।

चरण 2: विचारों का संतुलन और भाषा केवल संकट का वर्णन पर्याप्त नहीं है। खेती, पेयजल और आने वाली पीढ़ियों पर प्रभाव के साथ वर्षाजल-संचयन तथा पानी के विवेकपूर्ण उपयोग के उपाय भी रखें। छोटे, परस्पर जुड़े वाक्य लेख को प्रवाह देते हैं। शीर्षक विषय की चिंता को व्यक्त करे। अंतिम पंक्ति पाठक को अपने व्यवहार में परिवर्तन के लिए प्रेरित करे।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख **धरती की सूखती गागर**

कभी गाँव का कुआँ पूरे मोहल्ले की प्यास बुझाता था; आज उसकी तली दिखाई देती है। शहरों में भी पानी पाने के लिए नलकूप लगातार गहरे किए जा रहे हैं। दिनोंदिन गिरता भू-जल स्तर हमारी लापरवाही की चेतावनी है। बढ़ती आबादी, अनियंत्रित दोहन और कंक्रीट के फैलाव ने वर्षाजल को धरती में समाने से रोका है। परिणामस्वरूप पेयजल और खेती, दोनों संकट में हैं। यदि हम अब भी नहीं सँभले, तो आने वाली पीढ़ियों को पानी के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। वर्षाजल-संचयन, तालाबों का संरक्षण और पानी का विवेकपूर्ण उपयोग आवश्यक है। घरों में टपकते नल ठीक करना भी बड़ा योगदान है। धरती की गागर भरना केवल सरकार का काम नहीं; यह हम सबका साझा दायित्व है। आज बची बूँद कल जीवन बचाएगी।

चरण 4: निष्कर्ष यह नमूना लेख लगभग 120 शब्दों में भू-जल संकट के कारण, परिणाम और समाधान को संवेदनशील भाषा में प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: ऐसे विषय में पहले एक जीवंत दृश्य चुनें, फिर कारण और प्रभाव जोड़ें तथा अंतिम पंक्ति में कोई व्यावहारिक संकल्प रखें।

7(घ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए –
स्वप्न में प्रिय अभिनेता/अभिनेत्री से भेंट [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्वप्न पर आधारित रचनात्मक लेख में कल्पना, आत्मीय अनुभव और घटनाओं का स्पष्ट क्रम महत्त्वपूर्ण है। कथानक स्वप्न में घटता है, इसलिए उसे वास्तविक साक्षात्कार का दावा नहीं बनाना चाहिए।
- लगभग 120 शब्दों में दृश्य की स्थापना, प्रिय कलाकार से संवाद और जागने पर अनुभव का प्रभाव दिखाया जा सकता है। भावुकता के साथ सहज भाषा लेख को विश्वसनीय बनाती है।

चरण 1: कथानक और प्रारूप तय करना एक आकर्षक शीर्षक दें और प्रथम पुरुष में अनुभव सुनाएँ। पहले स्वप्न का स्थान तथा वातावरण बताएँ। फिर प्रिय अभिनेता से अचानक भेंट, आरंभिक संकोच और बातचीत का क्रम रखें। अंत में अलार्म से जागने तथा स्वप्न से मिली प्रेरणा का उल्लेख करें। लेख में पत्र का संबोधन, पता या हस्ताक्षर आवश्यक नहीं है। कलाकार का चुनाव व्यक्तिगत रुचि के

अनुसार हो सकता है।

चरण 2: कल्पना को विषय से जोड़े रखना अभिनेता की फिल्मों की सूची देने के स्थान पर भेंट का अनुभव केंद्र में रखें। छोटा संवाद दृश्य को जीवंत बना सकता है, पर वह इस काल्पनिक स्वप्न का हिस्सा हो। चेहरे की मुस्कान, अपनी धड़कन और जागने के बाद की अनुभूति जैसे विवरण रचनात्मकता बढ़ाते हैं। घटनाओं की भीड़ से बचकर केवल एक प्रसंग को पूरा करना शब्द-सीमा में प्रभावपूर्ण रहता है।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख **स्वप्न की यादगार मुलाकात**

कल रात मैं स्वप्न में एक फिल्म के सेट पर पहुँच गया। सामने मेरे प्रिय अभिनेता अमिताभ बच्चन खड़े थे। उनकी परिचित आवाज सुनकर मैं खुशी से ठिठक गया। उन्होंने मुस्कराकर मेरा नाम पूछा और पास बैठने का संकेत किया। मेरा संकोच धीरे-धीरे दूर हुआ। मैंने उनसे पूछा कि सफलता का रहस्य क्या है। स्वप्न के उस आत्मीय संवाद में उन्होंने नियमित अभ्यास और कठिन परिश्रम का महत्त्व समझाया। फिर हमने साथ तस्वीर खिंचवाई। तभी निर्देशक ने उन्हें बुलाया। विदा लेते समय उन्होंने मेरे कंधे पर हाथ रखा, तो लगा जैसे कोई अपना प्रोत्साहित कर रहा हो। अचानक अलार्म बज उठा और मेरी आँख खुल गई। तस्वीर तो नहीं मिली, पर मन में पढ़ाई और अपने सपनों के लिए मेहनत करने का नया उत्साह भर गया।

चरण 4: निष्कर्ष नमूना लेख लगभग 120 शब्दों में स्वप्न का वातावरण, प्रिय अभिनेता से भेंट और उससे प्राप्त प्रेरणा का पूरा अनुभव प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: स्वप्न वाली रचना में आरंभ का दृश्य और जागने का क्षण स्पष्ट रखें; बीच में एक आत्मीय संवाद पूरे अनुभव को जीवंत बना देता है।

8(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए –

कहानी और नाटक में पाई जाने वाली समानताओं और असमानताओं का उल्लेख कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी और नाटक दोनों कथात्मक विधाएँ हैं; इनमें कथावस्तु, पात्र, संघर्ष और घटनाक्रम महत्त्वपूर्ण होते हैं।
- तुलना करते समय विषयगत समानता के साथ प्रस्तुति, संवाद और मंचीय सीमाओं का अंतर स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: समानताओं का आधार दोनों विधाएँ किसी घटना या जीवनानुभव को पात्रों और परिस्थितियों के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं। पात्रों का परस्पर संबंध, संघर्ष और घटनाओं का विकास कथानक को आगे बढ़ाते हैं। इसलिए अंतर बताते हुए यह कहना उचित नहीं कि कहानी में संवाद या नाटक में कथावस्तु नहीं होती।

चरण 2: प्रस्तुति की भिन्नता कहानीकार वर्णन द्वारा पात्र के मन, वातावरण और अतीत को सीधे बता सकता है। नाटक में वही बातें अभिनय, संवाद, मंचीय क्रिया और संकेतों से व्यक्त करनी होती हैं। नाटक का मंचन निश्चित समय और स्थान की व्यावहारिक सीमाओं में होता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कहानी और नाटक दोनों में कथावस्तु, पात्र, संवाद तथा संघर्ष होते हैं। दोनों जीवन की घटनाओं और मानवीय संवेदनाओं को व्यक्त करते हैं। कहानी मुख्यतः पढ़ी जाती है; उसमें कथाकार वर्णन और मनोविश्लेषण कर सकता है। नाटक अभिनय के लिए लिखा जाता है; उसमें घटनाएँ संवादों, दृश्य और क्रिया से सामने आती हैं। नाटक पर समय, मंच और दृश्यबंध की सीमाएँ लागू होती हैं।

चरण 4: निष्कर्ष दोनों का कथात्मक आधार समान है, किंतु कहानी में वर्णन और नाटक में मंचीय प्रस्तुति प्रधान है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले समान तत्त्व लिखें, फिर वर्णन और अभिनय के अंतर को मंच की सीमाओं से जोड़ें।

8(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए –

"रेडियो नाटक का लेखन सिनेमा और रंगमंच के लेखन से थोड़ा भिन्न भी है और थोड़ा मुश्किल भी" – कैसे ? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; श्रोता पात्र, दृश्य और अभिनय को देख नहीं सकता।
- रेडियो नाटक में संवाद, स्वर, ध्वनि प्रभाव, संगीत और मौन दृश्य-जगत का बोध कराते हैं।

चरण 1: माध्यम के अंतर को पहचानना रंगमंच और सिनेमा में दर्शक पात्रों की वेशभूषा, मुखमुद्रा, गतिविधि और परिवेश देख लेता है। रेडियो में दृश्य उपलब्ध नहीं होता। इसलिए लेखक को स्थान, समय और घटना की आवश्यक सूचना श्रव्य संकेतों में पिरोनी पड़ती है। केवल दृश्यात्मक मंच-निर्देश लिख देना पर्याप्त नहीं होता।

चरण 2: लेखन की कठिनाई का तर्क पात्रों की आवाजें और संवाद इतने स्पष्ट होने चाहिए कि श्रोता उनकी पहचान कर सके। ध्वनियाँ घटना समझाएँ, पर अनावश्यक शोर न बनें। संवाद स्वाभाविक भी रहें और दृश्य की कमी भी पूरी करें। इसी दोहरे दायित्व के कारण रेडियो नाटक का लेखन अपेक्षाकृत कठिन होता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर रेडियो नाटक केवल सुनाई देता है, जबकि सिनेमा और रंगमंच में दृश्य भी दिखाई देते हैं। इसलिए रेडियो लेखक को संवाद, आवाज़ के उतार-चढ़ाव, संगीत और ध्वनि प्रभावों से पात्रों, स्थान, वातावरण तथा घटनाओं का बोध कराना पड़ता है। संवाद स्वाभाविक और पात्रों की आवाज़ें पहचानने योग्य होनी चाहिए। दृश्य के बिना पूरी स्थिति स्पष्ट करना उसके लेखन को भिन्न और कठिन बनाता है।

चरण 4: निष्कर्ष दृश्य के अभाव की पूर्ति केवल श्रव्य साधनों से करना रेडियो नाटक की विशेष चुनौती है।

त्वरित सुझाव: केवल दृश्य नहीं होते कहना पर्याप्त नहीं; बताएँ कि संवाद और ध्वनि उनके स्थान पर क्या काम करते हैं।

8(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए –

कथावस्तु का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्य किस आधार पर विभाजित किए जाते हैं ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाट्य रूपांतरण में कथा को अभिनय योग्य दृश्य-इकाइयों में व्यवस्थित किया जाता है।
- स्थान, समय और घटनाक्रम के परिवर्तन दृश्य विभाजन के प्रमुख आधार हैं; कथानक की निरंतरता बनाए रखना आवश्यक है।

चरण 1: दृश्य की इकाई समझना एक दृश्य प्रायः किसी निश्चित स्थान और समय में घटने वाली संबद्ध क्रिया को प्रस्तुत करता है। कहानी का हर अनुच्छेद या वर्णन अपने-आप अलग दृश्य नहीं बन जाता। रूपांतरणकर्ता को देखना होता है कि कौन-सी घटना अभिनय और संवाद के द्वारा एक साथ प्रस्तुत की जा सकती है।

चरण 2: विभाजन के आधार और सावधानी स्थान बदलने, समय का अंतराल आने या घटनाक्रम का नया चरण शुरू होने पर नया दृश्य बनाया जा सकता है। पात्रों की उपस्थिति और मंचीय व्यवस्था भी ध्यान में रखी जाती है। पात्र के प्रत्येक प्रवेश या प्रस्थान पर दृश्य बदलना अनिवार्य नहीं; परिवर्तन का निर्णय नाटकीय आवश्यकता से होता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कथावस्तु के नाट्य रूपांतरण में दृश्य मुख्यतः घटनास्थल, समय और घटनाक्रम के परिवर्तन के आधार पर विभाजित किए जाते हैं। एक स्थान और समय की संबद्ध घटनाएँ सामान्यतः एक दृश्य में आती हैं। स्थान बदलने, समय का अंतराल आने या कथा में नया मोड़ आने पर नया दृश्य बनाया जाता है। विभाजन में पात्रों की उपस्थिति, मंचीय सुविधा और कथानक की निरंतरता का ध्यान रखते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष दृश्य-विभाजन कथा के स्थान, समय और क्रिया के बदलाव को मंच पर स्पष्ट और संगत बनाता है।

त्वरित सुझाव: दृश्य-विभाजन में स्थान, समय और घटना के परिवर्तन लिखें; हर अनुच्छेद को दृश्य न मानें।

9(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में दीजिए –

जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में से सबसे पुराना माध्यम कौन-सा है ? उसकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में मुद्रित माध्यम सबसे पुराना है। समाचारपत्र और पत्रिकाएँ इसके प्रमुख उदाहरण हैं।
- इसकी विशेषताएँ बताते समय मुद्रित सामग्री के स्थायित्व, पाठक की सुविधा, विस्तार और साक्षरता की आवश्यकता को ध्यान में रखना चाहिए।

चरण 1: माध्यम की पहचान और उत्तर का क्रम उत्तर की शुरुआत में स्पष्ट करें कि सबसे पुराना आधुनिक जनसंचार माध्यम मुद्रित माध्यम है। इसके बाद समाचारपत्र और पत्रिका के उदाहरण दें। फिर बताएँ कि छपी सामग्री को सुरक्षित रखा जा सकता है तथा पाठक उसे अपनी रुचि, समय और गति के अनुसार पढ़ सकता है। मुद्रण का संबंध भाषा के लिखित रूप से है; इसलिए इसे समझने के लिए पढ़ने का ज्ञान आवश्यक होता है।

चरण 2: विशेषताओं का आधार समझें रेडियो और टेलीविजन में प्रसारण की गति माध्यम तय करता है, जबकि मुद्रित सामग्री में पाठक कठिन अंश दोबारा पढ़ सकता है। लिखित सामग्री संदर्भ और प्रमाण के रूप में भी उपयोगी रहती है। मुद्रण और वितरण में समय लगने के कारण इसमें तत्काल घट रही घटना का सीधा प्रसारण संभव नहीं होता। उत्तर में इन बातों को अनावश्यक विस्तार दिए बिना प्रमुख विशेषताओं से जोड़ना चाहिए।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में उत्तर जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में मुद्रित माध्यम सबसे पुराना है। समाचारपत्र और पत्रिकाएँ इसके प्रमुख रूप हैं। छपी हुई सामग्री स्थायी होती है; उसे सुरक्षित रखकर बार-बार पढ़ा जा सकता है। पाठक अपनी सुविधा, रुचि और गति के अनुसार सामग्री चुन सकता है तथा बीच में रुककर विचार भी कर सकता है। इसमें समाचारों का विस्तृत विश्लेषण संभव है। भाषा, वर्तनी और व्याकरण की शुद्धता महत्त्वपूर्ण होती है। इसका लाभ उठाने के लिए पाठक का साक्षर होना आवश्यक है।

चरण 4: निष्कर्ष मुद्रित माध्यम सबसे पुराना आधुनिक जनसंचार माध्यम है; स्थायित्व, पुनर्पाठ और पाठक को पढ़ने की स्वतंत्रता इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं।

त्वरित सुझाव: माध्यम का नाम लिखकर स्थायित्व, अपनी गति से पठन, विस्तृत विश्लेषण और साक्षरता की आवश्यकता जैसे स्पष्ट बिंदु जोड़ें।

9(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में दीजिए –

पत्रकारीय लेखन किसे कहते हैं ? पत्रकारों के विभिन्न प्रकारों का विस्तार से उल्लेख कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार माध्यमों के लिए तथ्यों पर आधारित समाचार, रिपोर्ट, लेख आदि लिखना पत्रकारीय लेखन है। इसका उद्देश्य पाठक को विश्वसनीय सूचना और विवेचन देना है।
- कार्य-संबंध के आधार पर पत्रकार पूर्णकालिक, अंशकालिक और स्वतंत्र होते हैं। इनका अंतर नियुक्ति, नियमितता और भुगतान की व्यवस्था से स्पष्ट होता है।

चरण 1: परिभाषा और वर्गीकरण स्पष्ट करें पहले पत्रकारीय लेखन का संबंध समाचारपत्र, पत्रिका और अन्य समाचार माध्यमों से जोड़ें। फिर तीनों प्रकार के पत्रकारों को अलग-अलग पहचानें। पूर्णकालिक पत्रकार संस्थान का नियमित कर्मचारी होता है। अंशकालिक पत्रकार, जिसे स्ट्रिंगर भी कहते हैं, किसी संस्थान के लिए सीमित या निश्चित काम करता है। स्वतंत्र पत्रकार किसी एक संस्थान का स्थायी कर्मचारी नहीं होता; वह अलग-अलग माध्यमों के लिए सामग्री लिखता है और सामग्री के अनुसार पारिश्रमिक पाता है।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर समाचार माध्यमों के लिए समाचार, रिपोर्ट, लेख आदि लिखना पत्रकारीय लेखन कहलाता है। इसमें तथ्यपरकता, स्पष्टता और विश्वसनीयता आवश्यक हैं। पत्रकार मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं। पूर्णकालिक पत्रकार किसी समाचार-संगठन का नियमित वेतनभोगी कर्मचारी होता है। अंशकालिक पत्रकार या स्ट्रिंगर किसी संस्थान के लिए निश्चित काम करता है और निर्धारित

पारिश्रमिक प्राप्त करता है। स्वतंत्र पत्रकार किसी एक संगठन से स्थायी रूप से संबद्ध नहीं होता। वह विभिन्न समाचारपत्रों और पत्रिकाओं के लिए लिखता है तथा प्रकाशित सामग्री के आधार पर भुगतान पाता है।

चरण 3: निष्कर्ष पत्रकारीय लेखन समाचार माध्यमों के लिए तथ्याधारित लेखन है। पत्रकारों के प्रमुख प्रकार पूर्णकालिक, अंशकालिक और स्वतंत्र हैं।

त्वरित सुझाव: तीनों प्रकार याद रखने के लिए नियमित कर्मचारी, सीमित काम और विभिन्न संस्थानों के लिए स्वतंत्र लेखन का अंतर स्पष्ट करें।

9(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में दीजिए –

समाचार लेखन की शैली का विस्तार से वर्णन करते हुए लिखिए कि यह शैली समाचार-लेखन की मानक शैली कैसे बनी। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार में तथ्यों को उनके महत्त्व के घटते क्रम में रखने की पद्धति उल्टा पिरामिड शैली कहलाती है। पाठक को घटना का सार आरंभ में मिल जाता है।
- इस शैली में घटनाक्रम की समयानुसार कथा सुनाने के बजाय पहले मुख्य समाचार, फिर उसका विस्तार और अंत में अपेक्षाकृत कम आवश्यक विवरण आता है।

चरण 1: शैली की संरचना समझिए समाचार का पहला अनुच्छेद आमुख या इंट्रो होता है। इसमें घटना का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथ्य सामने आता है और आवश्यकतानुसार क्या, कौन, कहाँ, कब, क्यों और कैसे का संक्षिप्त उत्तर मिलता है। इसके बाद मध्य भाग में घटना की पृष्ठभूमि, संबंधित विवरण तथा कथन दिए जाते हैं। अंतिम भाग में अतिरिक्त जानकारी रहती है। इसलिए आरंभ को पढ़कर भी पाठक मूल घटना जान लेता है।

चरण 2: मानक बनने के कारण स्पष्ट कीजिए अमेरिकी गृहयुद्ध के दौरान संवाददाताओं को खबरें तार से भेजनी पड़ती थीं। संचार बाधित होने की आशंका के कारण वे सबसे जरूरी तथ्य पहले भेजते थे। बाद में समाचारपत्रों ने इस उपयोगी क्रम को अपनाया। इससे संपादक स्थान की कमी होने पर समाचार को नीचे से काट सकता था, जबकि मुख्य सूचना सुरक्षित रहती थी। पाठक की सुविधा तथा संपादन की सरलता ने इसे मानक बनाया।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में उत्तर समाचार लेखन की मानक शैली उल्टा पिरामिड शैली है। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य पहले, उसके बाद विवरण और अंत में कम महत्त्व की जानकारी दी जाती है। आमुख समाचार का सार प्रस्तुत करता है। अमेरिकी गृहयुद्ध में तार द्वारा खबर भेजते समय संचार टूटने की आशंका रहती थी, इसलिए संवाददाता प्रमुख तथ्य पहले भेजते थे। यह शैली प्रचलित हो गई। इससे पाठक जल्दी मुख्य बात जान लेता है और संपादक आवश्यक सूचना बचाते हुए समाचार को नीचे से छोटा कर सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष उल्टा पिरामिड शैली में महत्त्व का घटता क्रम पाठकीय सुविधा और संपादन की व्यावहारिक आवश्यकताओं को पूरा करता है; इसी कारण यह समाचार लेखन की मानक शैली बनी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में आमुख, महत्त्व का घटता क्रम, तार से समाचार भेजने की ऐतिहासिक परिस्थिति और नीचे से काटने की सुविधा अवश्य जोड़ें।

10(क). पद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए –

“आत्मपरिचय” कविता के आधार पर लिखिए कि व्यक्ति का समाज के साथ क्या संबंध है और कवि का संसार के साथ कैसा संबंध है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंश राय बच्चन की कविता में व्यक्ति सामाजिक जीवन से जुड़ा होते हुए भी अपनी स्वतंत्र अनुभूतियों और प्रेम को महत्त्व देता है।

- कवि का जग से संबंध विरोधाभासी है: वह संसार का भार वहन करता है, फिर भी सांसारिक स्वीकृति को जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं मानता।

चरण 1: व्यक्ति और समाज का संबंध पहचानिए व्यक्ति समाज से अलग रहकर अपना जीवन नहीं बना सकता। सामाजिक संबंध, दायित्व और अनुभव उसके व्यक्तित्व को आकार देते हैं। कविता में जगजीवन का भार लिए फिरने की बात इस संबंध की ओर संकेत करती है। फिर भी व्यक्ति की निजी संवेदनाएँ और जीवनदृष्टि होती हैं; समाज से जुड़ाव का अर्थ अपने व्यक्तित्व को पूरी तरह मिटा देना नहीं है।

चरण 2: कवि की स्वतंत्र जीवनदृष्टि समझिए कवि संसार से स्नेह प्राप्त करता है और अपने भीतर प्रेम तथा भावनाओं का संसार सँजोए रहता है। वह जग की परवाह न करने की बात कहकर लोकस्वीकृति और सांसारिक बंधनों से अपनी स्वतंत्रता व्यक्त करता है। उसका मन बाहरी जगत से जुड़कर भी अपनी अनुभूतियों के अनुसार चलता है। इस प्रकार उसकी उदासीनता संवेदनहीनता नहीं, निजी भावजगत की रक्षा है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर व्यक्ति समाज का अंग है; उसके सुख-दुःख और दायित्व सामाजिक जीवन से जुड़े हैं। फिर भी उसकी अपनी अनुभूतियाँ और स्वतंत्र पहचान होती है। कवि जगजीवन का भार उठाता है तथा संसार से स्नेह पाता है, लेकिन उसकी मान्यताओं की परवाह नहीं करता। वह अपने प्रेममय अंतर्जगत में जीता है। इस प्रकार संसार से जुड़ाव और वैयक्तिक स्वतंत्रता उसके व्यक्तित्व में साथ-साथ हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कवि समाज से संबद्ध होकर भी अपनी प्रेमपूर्ण अनुभूतियों और स्वतंत्र व्यक्तित्व की रक्षा करता है। यही उसके संसार से संबंध की विशेषता है।

त्वरित सुझाव: जगजीवन का भार और जग की परवाह न करना—इन दोनों भावों को जोड़कर सामाजिक जुड़ाव तथा निजी स्वतंत्रता स्पष्ट करें।

10(ख). पद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए –

कविता की उड़ान को चिड़िया के समान बताते हुए भी कवि ने यह क्यों कहा है कि कविता की उड़ान चिड़िया की समझ से परे है ? 'कविता के बहाने' के संदर्भ में लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण कविता की रचनात्मक शक्ति को चिड़िया की उड़ान के माध्यम से समझाते हैं, पर कविता की व्यापकता उससे आगे जाती है।
- चिड़िया की उड़ान भौतिक सीमाओं में होती है; कविता की कल्पना समय, स्थान और विचार की सीमाओं का अतिक्रमण करती है।

चरण 1: समानता का आधार समझिए चिड़िया खुले आकाश में उड़ती है और कविता कल्पना के सहारे नए भावलोक तक पहुँचती है। दोनों में गति, स्वतंत्रता और विस्तार का भाव है। इसी समानता के आधार पर कवि कविता को चिड़िया के बहाने एक उड़ान कहता है। यहाँ उड़ान केवल स्थान बदलना नहीं, परिचित अनुभवों से आगे बढ़कर नई संभावनाओं को देखना भी है।

चरण 2: दोनों की सीमा में अंतर स्पष्ट कीजिए चिड़िया की वास्तविक उड़ान उसके पंखों, शक्ति और भौतिक आकाश तक सीमित रहती है। कविता कल्पना तथा संवेदना से मनुष्य के भीतर और बाहर के संसार को जोड़ सकती है। वह अतीत, वर्तमान और भविष्य में विचरण करती तथा दूरस्थ अनुभवों को निकट लाती है। इसलिए उसकी असीम रचनात्मक पहुँच चिड़िया की अनुभूति और समझ में नहीं समा सकती।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर चिड़िया और कविता दोनों की उड़ान स्वतंत्रता और विस्तार का बोध कराती है। लेकिन चिड़िया की उड़ान पंखों तथा भौतिक आकाश की सीमाओं में बँधी है। कविता कल्पना और संवेदना के सहारे देश, काल तथा बाहरी सीमाओं से आगे जाती है। वह भीतर-बाहर के संसार को जोड़ती है। इसलिए कविता की असीम रचनात्मक उड़ान चिड़िया की समझ से परे है।

चरण 4: निष्कर्ष चिड़िया की सीमित भौतिक उड़ान के मुकाबले कविता की कल्पनात्मक उड़ान असीम है; इसीलिए वह चिड़िया की समझ से परे कही गई है।

त्वरित सुझाव: पहले स्वतंत्र उड़ान की समानता बताएँ, फिर चिड़िया की भौतिक सीमा और कविता की असीम कल्पना का अंतर लिखें।

10(ग). पद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए –
तुलसीदास ने 'कवितावली' के छंदों में अपने समय के लोगों की जीविका-विहीनता का चित्रण किस प्रकार किया है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास समाज के अलग-अलग वर्गों की दशा दिखाकर आजीविका के व्यापक संकट को व्यक्त करते हैं।
- किसान, भिखारी, व्यापारी और सेवक का उल्लेख बताता है कि संकट किसी एक पेशे तक सीमित नहीं है।

चरण 1: विभिन्न वर्गों की स्थिति समझना किसान को खेती से उपज नहीं मिलती, भिखारी को भीख नहीं मिलती, व्यापारी का व्यापार नहीं चलता और काम चाहने वाले सेवक को चाकरी नहीं मिलती। आजीविका के सारे परिचित साधन निष्फल हो गए हैं। इस क्रम से समाज की आर्थिक व्यवस्था के ठप पड़ने का चित्र उभरता है। यह चित्र तत्कालीन समाज के आर्थिक संकट की व्यापकता को सामने लाता है।

चरण 2: जनसाधारण की विवशता पहचानना रोजगार छिन जाने से लोग चिंता और दुख में डूबे हैं। उन्हें समझ नहीं आता कि कहाँ जाएँ और क्या करें। पेट की आग इतनी विकराल है कि मनुष्य उचित-अनुचित का विवेक भी खोने लगता है। कवि इस स्थिति के माध्यम से दरिद्रता, असहायता और सामाजिक दुर्दशा पर करुण दृष्टि डालते हैं।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर तुलसीदास ने बताया है कि किसान को खेती, भिखारी को भीख, व्यापारी को व्यापार और सेवक को नौकरी नहीं मिल रही। जीविका के साधन नष्ट होने से लोग दुखी और चिंतित हैं। वे नहीं जानते कि कहाँ जाएँ, क्या करें। पेट की आग बुझाने के लिए लोग अनुचित काम करने तथा अपने बच्चों को बेचने तक को विवश हैं।

चरण 4: निष्कर्ष तुलसीदास ने विभिन्न व्यवसायों की निष्फलता और भूख से उत्पन्न विवशता द्वारा व्यापक जीविका-विहीनता का मार्मिक चित्रण किया है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में किसान, भिखारी, व्यापारी और सेवक की स्थिति के साथ भूख से उपजी विवशता अवश्य जोड़ें।

11(क). पद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए –
'बगुलों के पंख' कविता से उद्धृत पंक्ति 'हौले-हौले जाती मुझे बाँध निज माया से' – में कवि किस माया की बात कर रहा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि का मन प्राकृतिक दृश्य की आकर्षण-शक्ति से बँधता है।
- काले बादलों के सामने उड़ते सफेद बगुलों के पंख रंगों का मनोहारी विरोध रचते हैं।

चरण 1: माया का संदर्भ पहचानना यहाँ माया का अर्थ छल या सांसारिक धन नहीं है। कवि आकाश में उड़ते बगुलों के दृश्य के सम्मोहन की बात कर रहा है। बादलों की काली पृष्ठभूमि पर बगुलों के उजले पंख अत्यंत सुंदर लगते हैं और कवि की दृष्टि को अपनी ओर खींच लेते हैं। पंखों की गति के साथ दृश्य भी निरंतर बदलता है। इसी कारण कवि का ध्यान बार-बार उस ओर जाता है। धीरे-धीरे बाँधने का भाव सौंदर्य के कोमल और क्रमशः बढ़ते प्रभाव को व्यक्त करता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कवि काले बादलों से भरे आकाश में उड़ते सफेद बगुलों के पंखों के मोहक सौंदर्य की माया की बात कर रहा है। यह मनोहारी दृश्य उसे धीरे-धीरे अपने आकर्षण में बाँधकर इतना तन्मय कर देता है कि वह स्वयं को भूलने लगता है।

चरण 3: निष्कर्ष यह माया प्रकृति के अनुपम सौंदर्य की सम्मोहक आकर्षण-शक्ति है।

त्वरित सुझाव: माया का अर्थ बताते समय काले बादलों और सफेद पंखों के रंग-विरोध का उल्लेख करें।

11(ख). पद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए –

'बादल राग' कविता में कवि ने धनिकों के भवनों को 'आतंक-भवन' क्यों कहा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में बादल क्रांति तथा सामाजिक परिवर्तन के प्रतीक हैं।
- धनिकों की संपन्नता के पीछे शोषण है; परिवर्तन की संभावना उन्हें भयभीत करती है।

चरण 1: आतंक का कारण स्पष्ट करना धनिक अपने ऊँचे भवनों में सुख-सुविधाएँ भोगते हैं, लेकिन वे शोषित जनता की पीड़ा से परिचित हैं। बादलों की गर्जना क्रांति की चेतावनी बनकर उन्हें अपनी संपत्ति और प्रभुत्व छिनने का भय देती है। इसीलिए वैभवपूर्ण भवनों के भीतर भी निश्चिंतता नहीं, आतंक व्याप्त है। अतः आतंक बाहर की भव्यता में नहीं, उसके भीतर रहने वाले शोषक वर्ग की आशंका में है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर धनिकों के भवन शोषण से अर्जित संपत्ति और वैभव के केंद्र हैं। बादलों की क्रांतिकारी गर्जना सुनकर धनिकों को अपने धन और प्रभुत्व के नष्ट होने का भय सताता है। उनके भीतर व्याप्त इसी आतंक के कारण कवि ने उन्हें आतंक-भवन कहा है।

चरण 3: निष्कर्ष धनिकों के भवनों में क्रांति और संपत्ति छिनने का भय व्याप्त है, इसलिए वे आतंक-भवन हैं।

त्वरित सुझाव: भवन की भव्यता का वर्णन करने के बजाय शोषण, क्रांति और धनिकों के भय का संबंध स्पष्ट करें।

11(ग). पद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए –

'उषा' कविता के आधार पर लिखिए कि काली सिल पर लाल केसर मलने से किस प्रकार का दृश्य उपस्थित होता है ? यह तुलना कवि ने किस आधार पर की है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उषाकाल के आकाश को समझाने के लिए कवि परिचित घरेलू वस्तुओं का बिंब देता है।
- काली सिल और लाल केसर की तुलना आकाश के गहरे रंग तथा उगती लालिमा के रंग-साम्य पर आधारित है।

चरण 1: दृश्य और तुलना का आधार स्पष्ट करना काली सिल पर केसर मलने से गहरे रंग की सतह पर लालिमा फैलती दिखाई देती है। इसी तरह भोर में रात का अँधेरा पूरी तरह मिटा नहीं होता और पूर्व दिशा में सूर्य की लाल आभा फैलने लगती है। कवि ने इस रंग-साम्य से उषा के बदलते आकाश को सजीव बनाया है। यह तुलना आकार की अपेक्षा रंगों पर टिकी है। परिचित घरेलू वस्तु से विशाल आकाश का सौंदर्य सहज अनुभव बन जाता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर काली सिल पर लाल केसर मलने से काली पृष्ठभूमि पर लालिमा फैलने का दृश्य बनता है। उषाकाल में गहरे आकाश पर भी ऐसी ही लाल आभा फैलती है। कवि ने दोनों दृश्यों के रंग-साम्य और लालिमा के फैलाव के आधार पर यह तुलना की है।

चरण 3: निष्कर्ष यह बिंब अँधेरे आकाश पर भोर की लालिमा फैलने का दृश्य उपस्थित करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दोनों रंगों का साम्य बताएँ: काली सिल जैसा आकाश और केसर जैसी उषा की लालिमा।

12(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए –

'काले मेघा दल के दल उमड़ते हैं, पानी झमाझम बरसता है, पर गगरी फूटी की फूटी रह जाती है, बैल पियासे के पियासे रह जाते हैं।'
'काले मेघा पानी दे' से ली गई प्रस्तुत पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पंक्ति में वर्षा और प्यास के विरोध द्वारा समाज की विडंबना व्यक्त हुई है।
- संसाधन उपलब्ध होने पर भी उनका लाभ जरूरतमंद तक न पहुँचना अव्यवस्था और असमान वितरण का संकेत है।

चरण 1: प्रतीकों का अर्थ समझना मेघों का उमड़ना और झमाझम बरसना देश में धन, साधनों तथा सहायता की उपलब्धता का संकेत देता है। फूटी गगरी में जल टिक नहीं सकता; वह ऐसी दोषपूर्ण व्यवस्था का प्रतीक है जिसमें उपलब्ध साधन नष्ट हो जाते हैं या सही स्थान तक नहीं पहुँचते। प्यासे बैल वास्तविक जरूरतमंदों की अतृप्त आवश्यकता को सामने रखते हैं।

चरण 2: सामाजिक विडंबना स्पष्ट करना सिर्फ साधन जुटना पर्याप्त नहीं है। यदि उनके उपयोग और वितरण की व्यवस्था दोषपूर्ण हो तो प्रचुरता के बीच भी अभाव बना रहता है। कथन उन योजनाओं और संसाधनों पर व्यंग्य करता है जिनसे जनता को लाभ मिलना चाहिए, लेकिन अव्यवस्था तथा भ्रष्टाचार के कारण जरूरतमंद वंचित रह जाते हैं। वर्षा की प्रचुरता और बनी हुई प्यास इसी विरोध को तीखा करती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर इस पंक्ति में संसाधनों की प्रचुरता के बावजूद जरूरतमंदों के अभावग्रस्त रहने की विडंबना है। देश में धन और योजनाओं की कमी नहीं, किंतु व्यवस्था की खामियों तथा भ्रष्टाचार से उनका लाभ आम जनता तक नहीं पहुँचता। जैसे फूटी गगरी वर्षा का जल सँभाल नहीं पाती और बैल प्यासे रहते हैं, वैसे ही साधन होते हुए भी लोगों की आवश्यकताएँ अधूरी रहती हैं।

चरण 4: निष्कर्ष पंक्ति दोषपूर्ण व्यवस्था और संसाधनों के असमान वितरण के कारण बने रहने वाले जन-अभाव पर व्यंग्य करती है।

त्वरित सुझाव: वर्षा, फूटी गगरी और प्यासे बैल को क्रमशः संसाधन, दोषपूर्ण व्यवस्था और वंचित जरूरतमंदों से जोड़ें।

12(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए –

'पितृसत्तात्मक-मान्यताओं और छल-छद्म भरे समाज में अपने और अपनी बेटियों के हक की लड़ाई ने भक्तिन के जीवन की दिशा पूरी तरह बदल दी।' भक्तिन पाठ के आधार पर उदाहरण सहित सिद्ध कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भक्तिन के जीवन में स्त्री होने के कारण मिला अन्याय और उसका प्रतिरोध मुख्य आधार हैं।
- पति की मृत्यु के बाद संपत्ति और बेटियों के अधिकार बचाने का संघर्ष उसके निर्णयों को दिशा देता है।

चरण 1: पारिवारिक अन्याय पहचानें भक्तिन को पुत्र न होने के कारण सास और जिठानियों की उपेक्षा सहनी पड़ी। घर के श्रम में उसकी और उसकी बेटियों की भागीदारी अधिक थी, फिर भी उन्हें बराबरी नहीं मिली। पति की मृत्यु पर परिवार के लोग उसके धन और संपत्ति पर अधिकार चाहते थे। उसने पुनर्विवाह का दबाव स्वीकार नहीं किया और अपनी स्वतंत्र गृहस्थी बचाने का प्रयास किया।

चरण 2: छल और उसके परिणाम समझें बड़ी बेटी के विधवा होने पर जेठ के पुत्र ने अपने साले के साथ मिलकर उसकी संपत्ति हथियाने की चाल चली। उस युवक ने बेटी की कोठरी में घुसकर बदनामी का षड्यंत्र किया। पंचायत ने बेटी की इच्छा की उपेक्षा करके उसी युवक के साथ उसका संबंध जोड़ दिया। यह न्याय के नाम पर स्त्री की असहमति दबाने का उदाहरण है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों का उत्तर पुत्र न होने पर भक्तिन और उसकी बेटियों को ससुराल में भेदभाव सहना पड़ा। पति की मृत्यु के बाद उसने पुनर्विवाह से इनकार करके संपत्ति बचाई। विधवा बेटी को छलपूर्वक एक युवक से बाँधने का पंचायत का निर्णय वह रोक न सकी। दामाद की निकम्मी प्रवृत्ति और आर्थिक संकट से जूझते हुए अंततः वह आजीविका के लिए शहर आ गई।

चरण 4: निष्कर्ष अपने और बेटियों के अधिकारों का संघर्ष भक्तिन को पारिवारिक जीवन से शहर की आजीविका तक ले आया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पति की मृत्यु, बेटी के विरुद्ध षड्यंत्र और शहर आने के बीच कारणों का संबंध दिखाइए।

12(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए –
बाज़ार का जादू किन लोगों पर अधिक असर करता है ? इसके चढ़ने-उतरने पर क्या स्थिति होती है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार का जादू इच्छा और वास्तविक आवश्यकता का भेद मिटा देता है।
- खाली मन तथा भरी जेब वाला व्यक्ति बाहरी आकर्षण से अधिक प्रभावित होता है।

चरण 1: आकर्षण की मन:स्थिति समझें लेखक के अनुसार बाज़ार का जादू आँख के रास्ते काम करता है। जिसके मन में अपनी जरूरत स्पष्ट नहीं है, वह वस्तुओं की सजावट और विविधता देखकर आसानी से आकर्षित होता है। जेब भरी हो तो वह मन की इस अस्थिरता को खरीदारी में बदल सकता है। इसके विपरीत निश्चित आवश्यकता लेकर आया व्यक्ति चयन का विवेक बनाए रखता है।

चरण 2: जादू चढ़ने और उतरने का अंतर जादू चढ़ने पर व्यक्ति को हर वस्तु उपयोगी तथा जरूरी लगने लगती है। वह अपने वर्तमान साधनों को अपर्याप्त समझकर अनावश्यक सामान जुटाता है। आकर्षण समाप्त होने पर मालूम होता है कि खरीदी हुई बहुत-सी वस्तुओं की जरूरत ही नहीं थी। तब सुख मिलने के स्थान पर अनावश्यक वस्तुओं का बोझ, खर्च और अपने अविवेक पर खीझ बचती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों का उत्तर बाज़ार का जादू उन लोगों पर अधिक असर करता है जिनका मन खाली और जेब भरी होती है। निश्चित आवश्यकता न होने से वे सजावट और वस्तुओं की चमक में फँस जाते हैं। जादू चढ़ने पर सब कुछ आवश्यक लगता है और वे अनावश्यक खरीदारी करते हैं। जादू उतरने पर वस्तुएँ बेकार लगती हैं तथा खर्च और अविवेक पर खीझ होती है।

चरण 4: निष्कर्ष आवश्यकता की स्पष्ट समझ बाज़ार के आकर्षण से बचाती है; विवेकहीन खरीदारी बाद में खीझ देती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को तीन बिंदुओं में रखें: प्रभावित व्यक्ति, आकर्षण के समय की दशा और आकर्षण उतरने का परिणाम।

13(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए –
'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर लुट्टन पहलवान की अंतिम इच्छा लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लुट्टन की अंतिम इच्छा उसके पहलवानी के स्वाभिमान और ढोलक से आजीवन संबंध को प्रकट करती है।
- पाठ में बताई दोनों इच्छाएँ उत्तर में आवश्यक हैं: चिता पर रखने का ढंग और ढोलक बजाना।

चरण 1: चिता संबंधी इच्छा स्पष्ट करें लुट्टन ने अपने शिष्यों से कहा था कि मरने पर उसे चिता पर पेट के बल लिटाया जाए। जीवन भर अखाड़े में वह चित नहीं हुआ था; मृत्यु के बाद भी वह अपनी पीठ नीचे रखने को तैयार नहीं था। यह इच्छा उसकी अडिग पहलवानी और पराजय स्वीकार न करने वाली मानसिकता की सूचक है। ढोलक की ध्वनि ने संकट के समय भी उसमें लड़ने का उत्साह जगाया था; इसलिए वह अंतिम यात्रा में भी उसी स्वर का साथ चाहता था।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों का उत्तर लुट्टन की अंतिम इच्छा थी कि उसे चिता पर पेट के बल लिटाया जाए, क्योंकि जीवन में वह कभी चित नहीं हुआ था। वह चाहता था कि चिता में आग देते समय ढोलक बजाई जाए। ढोलक उसके जीवन और साहस की साथी थी।

चरण 3: निष्कर्ष उसकी इच्छाएँ थीं: चिता पर पेट के बल लिटाना और अग्नि देते समय ढोलक बजाना।

त्वरित सुझाव: पेट के बल लिटाने की इच्छा के साथ उसका कारण और अग्नि देते समय ढोलक बजाने की बात अवश्य लिखें।

13(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए –

'शिरीष के फूल' निबंध में लेखक ने जीवन के किस शाश्वत सत्य का उल्लेख किया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जीवन में परिवर्तन और आगे बढ़ना शाश्वत सत्य हैं।
- शिरीष के पुराने फलों का नए फूल-पत्तों के आने पर झड़ना इस सत्य का प्राकृतिक उदाहरण है।

चरण 1: प्राकृतिक उदाहरण का आशय शिरीष के पुराने फल देर तक पेड़ से चिपके रहते हैं, पर नए फूल और पत्ते आने पर उन्हें स्थान छोड़ना पड़ता है। लेखक इस दृश्य के माध्यम से उन जड़ प्रवृत्तियों की ओर संकेत करते हैं जो समय बदलने पर भी पुराने अधिकार या स्थान को छोड़ना नहीं चाहतीं। जीवन का प्रवाह ऐसी जड़ता को अंततः हटा देता है। यहाँ पुराने फल केवल वनस्पति का विवरण नहीं हैं; वे समय के परिवर्तन को न मानने वाली जड़ मानसिकता के प्रतीक भी बनते हैं।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों का उत्तर लेखक ने बताया है कि परिवर्तन और निरंतर आगे बढ़ना जीवन का शाश्वत सत्य है। पुराने को नए के लिए स्थान छोड़ना पड़ता है। शिरीष के पुराने फल नए फूल-पत्तों के आने पर झड़ जाते हैं। जड़ होकर टिके रहना जीवन के विरुद्ध है।

चरण 3: निष्कर्ष जीवन गतिशील है; परिवर्तन स्वीकार करना और आगे बढ़ना उसका शाश्वत नियम है।

त्वरित सुझाव: शाश्वत सत्य बताते समय शिरीष के पुराने फलों और नए फूल-पत्तों का उदाहरण जोड़कर बात स्पष्ट करें।

13(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए –

महादेवी वर्मा अपने और भक्तिन के संबंधों को मालिक और नौकरानी का संबंध क्यों नहीं मानती ? 'भक्तिन' पाठ के संदर्भ में लिखिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संबंध का आधार वेतन या आदेश के स्थान पर आत्मीयता, विश्वास और अपनापन है।
- लेखिका के जीवन में भक्तिन की स्वतंत्र भूमिका उसके पारिवारिक स्थान को स्पष्ट करती है।

चरण 1: मालिक-सेवक की सीमा से आगे भक्तिन केवल निर्धारित काम करके वेतन लेने वाली सेविका नहीं थी। लेखिका उसके लिए वेतन तय नहीं कर सकीं और भक्तिन भी उनके धन को पराया मानकर नहीं चलती थी। वह लेखिका के खान-पान तथा रहन-सहन में हस्तक्षेप करती और उन्हें अपनी सुविधा के अनुकूल ढालती थी। इस व्यवहार में दूर खड़े कर्मचारी का संकोच नहीं, अपनेपन का अधिकार था।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों का उत्तर महादेवी और भक्तिन के बीच वेतन पर आधारित औपचारिक संबंध नहीं था। भक्तिन लेखिका के जीवन में अपनत्व से हस्तक्षेप करती थी और उनके धन को पराया नहीं मानती थी। दोनों में गहरा विश्वास, स्नेह और पारिवारिक आत्मीयता थी; इसलिए लेखिका उसे केवल नौकरानी नहीं मानतीं।

चरण 3: निष्कर्ष उनका संबंध पारिवारिक आत्मीयता और विश्वास का था, इसलिए उसे मालिक और नौकरानी के सीमित संबंध में नहीं बाँधा जा सकता।

त्वरित सुझाव: वेतन तय न होना, अपनेपन का अधिकार और जीवन में हस्तक्षेप—इनसे संबंध की आत्मीयता सिद्ध करें।